Goonjnayi@gmail.com

मई अंक 2022

शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका नई गूंज

Www.nayigoonj.com

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज-------.

वर्ष 2022

अंक 5

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

संपादकीय

शिवा 'स्वयं'

तेरे आँचल की छाँव

झरनों की कलकल...चिड़ियों की चहचहाट सुनने वाले कान अब इंसानों के पास हैं नहीं ! कहते हैं ना कि संगति का असर जरूर पड़ता है ! बिल्कुल सही कहते हैं ! सुना होगा ना ये गीत......आपने

काज़ल की कोठरी में कैसो ही जतन करो

काज़ल क़ो दाग भाई लागे ही लागे

मशीनों से मानव का रिश्ता इतना गहरा हो गया है कि...... मशीनों के बिना एक पल नहीं रह सकता वो ! तो मशीनों के कान कहाँ होते हैं ? उनको तो बस नियत तरीके से चलना होता है ! बाकि वो कुछ नहीं जानती !

वो छत क़ो पानी से रात में भिगोना और कुछ ही देर में सूख जाने पर ज़मीन पर बिस्तर लगा कर खुले आसमान के नीचे तारों की चादर ओढ़ कर सोना.......... वो ईश्वर की बनी सृष्टि.....पर उन्हीं की दी ठंडी ठंडी हवा में सोना........ सब ऐसा हो गया जैसे स्वर्ग में जीने का सपना हो कोई ! ए. सी लग गये कमरों में ! हमने तो खुद क़ो ईश्वर से भी ऊँचा समझ लिया है अब ! अपने बने गाड़ी घोड़े, और तरह तरह के उपकरण अच्छे लगते हैं और प्रकृति नहीं जो ईश्वर की बनी है ! खुद पर इतना भरोसा ? और ईश्वर पर नहीं ?

हम सब अपने घर की सजी दीवारें तो देख पाते हैं, उन पर किये रंग रोगन के खराब होने से भी डरते हैं लेकिन मानव - मानव के संव्यवहार से हृदयों पर लगे दाग धब्बो से कतई नहीं घबराते !

ये सब इसीलिए ही तो है कि अब हम खुद क़ो ईश्वर मानने लगे हैं ! प्रगति ने इस मानव देह की समस्त इन्द्रियों क़ो मशीन बना दिया है जहाँ सब कुछ संचालित होता है यन्त्रवत................

कीमती तो वो हवा है जो पेड़ो के पत्तों क़ो छू कर बड़े हौले हौले हमें स्पर्श करती है माँ के आँचल की तरह ! पर अब लोहे के डब्बो में गोल गोल घूमती पंखुडियों से आती हवा क़ो हम माँ के आँचल की हवा से बेहतर मानने लगे हैं !

हम इंसानी ढांचें में हैं केवल...........पर इंसान नहीं......

हम वो नहीं जो ईश्वर ने हमें बनाना चाहा , हम वो हैं जो हमारी महत्वाकांक्षाओं ने हमें बना दिया ! निष्ठुर प्रगतिशील........!

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

"साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति- दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।
अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल:goonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को --द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्तें :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

Note:- **प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!**

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका		पृष्ठ संख्या
	लेख –	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	भविष्य के लिए पानी बचाये	प्रदीप कुमार शर्मा	1 – 2
2	कितना उपयोग है परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम	डॉ घनश्याम बादल	3 – 6
3	मौन आत्मा की भाषा है	बृजेश कुमार	7 – 8
4	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में गांव की उपस्थिति	डॉ जियाउर रहमान जाफरी	9 – 21
	कविता		
5	उनकी यादें	अमरेंद्र कुमार	22
6	लड़की / तुम मेरे पास रहना	अमरजीत कौंके	23 – 27
7	उम्मीद की उपज / इस मौसम में ओस नहीं आंसू गिरता है	कवि गोलेंद्र	28 – 30
8	कविता	गौरी शंकर वैश्य	31 – 32
9	गीत – कौन मानेगा	अरुण तिवारी	33 – 35
	कहानी		
10	रज में सिमटते रिश्ते	डॉ प्रणव भारती	36 – 42
11	मुझसे तो कुछ पूछा होता	डॉ शिवा धमेजा	43 – 45
	गजल		

12	गजल	डॉ राकेश जोशी	46 – 51
	लघु कथा –		
13	क्षणिक / समंदर	नीना सिन्हा	52 – 54
14	मेरे हिस्से में मेरी मां आई	समीर उपाध्याय	55 – 56
15	छूट गई तुम तो	डॉ नयना	57
	नारी तुम अबला नहीं सबला हो		
16	महाराजा दुष्यंत की पत्नी शकुंतला	बृजेश कुमार	58 – 60
	आलेख –		
17	पर्यावरण क्रांति के प्रेरक थे श्री कृष्ण	एमडी वैष्णव	61 – 63
18	ऐतिहासिक स्थल एक नजर – अजमेरु दुर्ग (राज.)		64 – 67
	साहित्य पुरस्कार के बारे में जानिए		
19	तुलसी सम्मान पुरस्कार		68 – 71
20	औषधिये पौधे के बारे में जानिए – आवला	शिवा धमेजा	72 – 73
	साक्षात्कार		
21	साक्षात्कार- सीनियर लीगल ऑफिसर	अनामिका भूषण	74 – 78

भविष्य के लिए पानी बचाएं

--प्रदीप कुमार शर्मा

झारखंड में कभी ताल तलैयों व कुओं की भरमार थी! लोग पानी पीने, नहाने धोने व खेती बारी वगैरह के लिए इन्हीं पर निर्भर थे! आज इन पठारी क्षेत्रों में बढ़ते भीषण गर्मी के प्रकोप से ताल तलैया, झील झरने व कुएं ईत्यादि सुखने लगे,. लोग चेते नहीं! कुओं को ढकवा दिया और बोरींग करवा ली! सुख चुके ताल तलैयों पर ताकि उसमें बरसात का पानी सालों भर जमा हो सके भूमाफियाओं की नजर पड़ी और बढ़ती आबादी को घर की.

दोनो की मिलीभगत ने सुख चुके तालाबों को मिट्टी से पाट कर समतल बना दिया और औने पौने दामों में खरीद बीक्री हो गई. पानी का प्राकृतिक स्रोत ही विलुप्त हो गया. बड़ी बड़ी बिल्डिंगे तैयार हो गई. उनमें पानी के लिए डीप बोरींग कराई गई और अंधा धुंध पानी की बर्बादी होने लगी. भुगर्भ में बैठे जलदेवता मनुष्य के अप्राकृतिक आचरण से कुपित होकर नीचे और नीचे की खिसकने को मजबूर हो गएं. नतीजा गर्मी आते ही पानी के लिए हलक सुखने लगता है.

राज्य से होकर बहने वाली बराकर नदी जिसपर मैथन डैम बना है तथा दामोदर नदी जिसमें सालों भर अथाह पानी रहता है. स्वर्णरिखा, खरखाई, कोयल, शंख तथा संजय नदी के साथ ही पानी के अन्यप्रमुख स्रोतों में तिलैया डैम, कोडरमा, डिमना लेक, जमशेदपुर, राँची लेक, चांडिल डैम, सीतारामपुर डेम ईत्यादि हैं. इतने स्रोतों के होते हुए भी गर्मी के दिनों में पानी के लिए लोग तरसने लगते हैं. बराकर और दामोदर नदी में पानी की कमी महसुस की जाने लगी है. यही हाल स्वर्णरेखा, खरखाई, संजय ईत्यादि नदियों का भी है. गर्मी आते ही ये नदीयां सुख जाती हैं. इन नदियों पर बनाए गए चेकडैम, इंटकवेल में भी पानी की कमी साफ दिखाई पड़ने लगती है.

पीने योग्य पानी का दूसरा स्रोत भूमिगत जल है जिसपर एक तिहाई आबादी निर्भर है. आज स्थिति यह है कि धरती के अंदर भी पानी सुखता जा रहा है. ऐसा लगता है मनुष्य ने पानी का इतना अधिक अनर्थक दोहन कर लिया है कि धरती का गर्भ भी पानी विहिन हो चुका है. 300-400 *फीट गहरे बोरींग करने के बाद भी पानी नहीं मिल रहा है. भूगर्भ शास्त्रियों के अनुसार भुजल स्तर नीचे की ओर भाग रहा है. इसका कारण भुमिगत जल का अत्यधिक दोहन है. यहां की एक बड़ी आबादी पीने योग्य पानी के लिए कुंआ, तालाब, झील व झरनों पर निर्भर था. जैसे जैसे संपन्नता बढ़ी. समाज आधुनिक होता गया. लोग कुंआ तालाब पर निर्भरता छोड़ आसानी से पानी प्राप्त करने के लिए ताबड़तोड़ बोरींग कराना शुरू कर दिया. यहीं से पानी की बबार्दी शुरू हो गई.*

ग्लोबल वार्मिंग *के चलते जैसे जैसे गर्मी बढ़ती गई. सबसे पहले* 30 *से* 40 *फीट गहरा कुंआ सुखने लगा. तालाब सुखने लगे. यहां तक कि चापानल भी सुखने लगे. कहीं कहीं पानी का स्तर अच्छा होने के कारण चापानल चल भी रहे थें तो उनपर पानी लेने वालों का तादाद इतना बढ़ गया कि हजारों लोग घंटों लाईन में लगकर पानी लेने पर विवश हैं. खराब पड़े चापानल मरम्मत के अभाव में जर्जर होकर बेकार पडे हैं.*

पानी की समस्या से निजात पाने के लिए झारखंड राज्य सरकार द्वारा 2006 *में स्वर्णरिखा नदी पर मोहरदा जलापूर्ति योजना का काम शुरू किया गया. बस्ती क्षेत्रों में पाईप लाईन बिछाकर पानी की सप्लाई शुरू की गई मगर यह पानी अभी भी लोग पीने के काम में नहीं लाते. एक आस जगी थी कि अब पानी की समस्या दूर हो जाएगी मगर करोड़ो रूपया खर्च करने के बाद भी यह मृगछलावा ही साबित हो रहा है. मोहरदा जलापूर्ति का पाईप जगह जगह से फटकर पानी बेफिजुल बह रहा है. देखने वाला कोई नहीं है.*

बीते 2010 *में* **राज्य सरकार** *द्वारा पानी की कमी को दूर करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में डीप बोरींग कराया गया. कुछ दिन तो डीप बोरींग से पानी का सप्लाई हुआ भी. मगर जल्दी ही लोग पानी का महत्व भुल गए और लगे पानी से गाड़ी, मवेशी ईत्यदि धोने. और तो और नल का टोटी खुला छोड़ पानी को बर्बाद करने लगे. हजारों रूपए खर्च कर लगाए गए डीप बोरींग बेकार हो गए और पाईप लाईन जर्जर होकर अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है.*

सरकार ने भी दूबारा इस ओर ध्यान नहीं दिया. पानी की समस्या वैसे का वैसे ही रह गया. नदियों के किनारे रहने वाले ग्रामीण अपने मैकेनिज्म पर सुख चुके नदी के बालू में लगभग एकआध फीट गड्ढा खोदकर चुंआ बनाते हैं. उसी में से स्वच्छ पानी निकाल कर पीने को मजबूर रहते हैं या फिर घर से मीलों दूर चलकर पानी ढोने को मजबूर हो जाते हैं. जिन जगहों पर पानी की कमी है वहां टैंकरों द्वारा पानी की आपूर्ति की जाती है.

झारखंड में पिछले लगभग दो तीन वर्षों से राज्य में ऐसी ही स्थितियां बन रही हैं. भुगर्भ का पानी नीचे की ओर खिसकता जा रहा है. इसका कारण डीप बोरींग बताया जा रहा है. राज्य में बिल्डरों द्वारा बनाए गए आवासीय फ्लैटों में पानी सप्लाई के लिए 300 से 400 फीट तक डीप बोरींग कराए गए हैं. भुगर्भ से भारी मात्रा में पानी नीकल जाने के कारण भुजल स्तर और नीचे चला गया है. हालत यह हो गई है कि आवासीय फ्लैटों में पीने के लिए पानी नहीं मिल रहा है. ऐसी स्थिति में कुछ लोगों की चांदी बन आई है. वे जहां तहां से पानी भर कर लाते हैं और इन रिहाइशी इलाकों में मनमर्जी रेट पर बेचते हैं. लोग पानी जैसे नैसर्गिक चीज को खरीद कर पीने को मजबूर हैं.

*पानी की कमी को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा **'वाटर हॉरवेस्टिंग"** पर भी जोर दिया गया. इसके तहत वर्षा के पानी को बेकार न बहने देकर उसे रोककर ग्राउंड लेबल में डालने की योजना बनाई गई. पानी को संरक्षित करने और बेकार न बहने देने के लिए पीछले साल रोजाना प्रशासनिक स्तर पर बैठकं होती रही है मगर नतिजा अभी भी सिफर है.*

*झारखंड के भुतपुर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास की योजना **'गांव का पानी गांव में खेत का पानी खेत में'** के तहत जल संरक्षण हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में एक लाख डोभा का निर्माण करवाया गया था ताकि उसमें बरसात का पानी सालों भर के लिए जमा हो सके. उसमें तो बंदरबांट हुआ ही जो डोभा बनवाए भी गए उनमें कुछ सुख चुके तो कुछ भर के समतल भी हो गए. यह योजना भी असफल हो गया.*

पीने योग्य पानी को लेकर लोगों में भी जागरूकता की भारी कमी है. पानी के लिए तरसते लोग सचेत नहीं हो रहे हैं. पानी की बर्बादी अब भी जारी है चाहे शहर हो या गांव. पानी को बचाने के लिए जन जागरण अभियान की सख्त जरूरत है. सबसे पहले डीप बोरींग को बैन किया जाना चाहिए. कुंआ को इससे मुक्त रखा जाय.

राज्य से होकर बहने वाली नदियों का पानी बरसात में लबालब भरा रहता है. बरसात के बाद भी उनमें दो से तीन महीने तक पानी रहता है. उन्हें खास तकनीकि से स्टोरेज किया जाना चाहिए. बरसात के बाद उन्हें फिल्टर करके पीने योग्य बनाया जा सके. इसके अलावा प्रत्येक नदी से पानी खींचकर उसे फिल्टर किया जाय और वही पानी सप्लाई किया जाना चाहिए. पानी का उपभोग करने वालों से मीटर लगाकर खपत शुल्क भी लिया जा सकता है. इससे जरूरत के अनुसार ही लोग पानी खपत करेंगे. अगर ऐसा होगा तो भविष्य के लिए पानी बचाया जा सकता है!

पानी का संरक्षण करें, जीवन का संरक्षण करें.

कितना उपयोगी है परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम !

एक अप्रैल को आएगा परीक्षा पर चर्चा 5.0 I प्रधानमंत्री फिर देंगे बच्चों को परीक्षा में सफलता के टिप्स।

डॉ घनश्याम बादल

एक अप्रैल को जब विश्व भर में 'मूर्ख दिवस' मनाया जा रहा होगा तब कभी विश्व गुरु कहे जाने वाले भारत में उस देश के प्रधानमंत्री नई दिल्ली में **तालकटोरा स्टेडियम** के टाउन हॉल से देशभर के बच्चों को तनाव मुक्त रहकर कैसे परीक्षा दी जा सकती है इस विषय पर अपने बहुचर्चित कार्यक्रम परीक्षा पर चर्चा के पांचवे संस्करण में बहु उपयोगी टिप्स दे रहे होंगे I

2018 में जब यह कार्यक्रम शुरू किया गया तब इसकी उपादेयता एवं प्रधानमंत्री द्वारा बच्चों को शिक्षा जैसे गंभीर विषय पर सलाह देने के मुद्दे को लेकर कई विशेषज्ञों ने उंगलियां उठाई थी और सवाल खड़ा किया था कि बच्चों को परीक्षा पर टिप्स देने का कार्य एक शिक्षक से बेहतर और कौन कर सकता है लेकिन हमेशा नवाचार में विश्वास करने वाले नरेंद्र मोदी ने बिना इन टिप्पणियों की परवाह किए हुए यह कार्यक्रम न केवल शुरू किया अपितु पिछले 5 साल से लगातार बोर्ड परीक्षाओं से पहले वह बच्चों के साथ 'एग्जाम वारियर्स' कार्यक्रम के तहत परीक्षा पर चर्चा करते हैं और उन्हें बताते हैं कि परीक्षा कोई डरने या डराने की चीज नहीं अपितु जो कुछ उन्होंने साल भर सीखा है बस उसे ही सलीके से प्रस्तुत करके सफलता पाने का एक सोपान मात्र है I

बच्चों पर भी इस कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है और आज देश भर के विद्यालयों में वें सभी बच्चे इस कार्यक्रम को देखकर खुश एवं लाभान्वित होते हैं जहां यह सुविधा उपलब्ध है I

प्रधानमंत्री के इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के प्रसारण का जिम्मा दूरदर्शन के साथ-साथ देशभर के प्रमुख टीवी चैनल ने भी लिया है जिस वजह से यह कार्यक्रम अधिकांश बच्चों विद्यालयों एवं शिक्षकों तक पहुंच रहा है। जो बच्चे इस कार्यक्रम का लाइव टेलीकास्ट नहीं देख पाते हैं उनके लिए भी यह कार्यक्रम सीबीएसई आईसीएसई स्वयंप्रभा शाला दर्पण एवं यूट्यूब जैसे अनेक माध्यमों पर उपलब्ध रहता है I इसमें दो राय नहीं कि प्रधानमंत्री का देश की नई पीढ़ी से गहरा लगाव है और अपने जीवन के संघर्ष तथा व्यवहारिक ज्ञान से वे बच्चों का मन मोह लेते हैं I

प्रधानमंत्री स्वयं मानते हैं कि बच्चों को परीक्षा एवं शिक्षा से संबंधित बेहतर टिप्स उनकी शिक्षक ही उन्हें दे सकते हैं इसीलिए उन्हें उनके बताए हुए मार्गदर्शन के अनुसार चलना चाहिए उनका उद्देश्य एवं लक्ष्य तो केवल बच्चों का मनोबल बनाए रखने एवं परीक्षा भय से उन्हें दूर रखने का है।

परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम को न केवल देश अपितु विदेशों में भी रुचि पूर्वक देखा जाता है और इस कार्यक्रम को करोड़ों दर्शक आसानी से मिल रहे हैं बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए इस कार्यक्रम के प्रचार प्रसार हेतु माय गॉव डॉट इन प्लेटफार्म पर इसका प्रचुर मात्रा में प्रचार किया जाता है एवं शिक्षक छात्र एवं अभिभावक इस पर अपना पंजीकरण करवाते हैं । यही नहीं परीक्षा पर अपना दृष्टिकोण देने के लिए भी विचार आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ शिक्षा से संबंधित विषय देकर भी शिक्षकों छात्रों एवं अभिभावकों से उनके विचार आमंत्रित किए जाते हैं जिनमें से चुनिंदा विचारों को प्रधानमंत्री अपने सीधे संवाद कार्यक्रम में शामिल करते हैं । जो बच्चे विद्यालयों की ओर से प्रधानमंत्री से प्रश्न पूछने के लिए चयनित किए जाते हैं के लिए पुरस्कार की व्यवस्था है वही जिन बच्चों शिक्षकों एवं अभिभावकों के विचार उपयोगी पाए जाते हैं उन्हें भी पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया जाता है। परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम की पांचवे संस्करण में रचनात्मक लेखन के लिए लगभग 15: 70 लाख प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है ।

वाकपटु एवं प्रखर वक्ता **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी** परीक्षा पे चर्चा के **5वें संस्करण** के दौरान दुनिया भर के छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ बातचीत करेंगे। परीक्षा पे चर्चा में प्रधानमंत्री एक जीवंत कार्यक्रम में अपनी अनूठी आकर्षक शैली में परीक्षा के तनाव और संबंधित क्षेत्रों से संबंधित छात्रों द्वारा पूछे गए गए सवालों के जवाब देते हैं। प्रधानमंत्री इस कार्यक्रम में न केवल बच्चों के प्रश्नों के जवाब देते हैं बल्कि एवं उनके द्वारा दिए गए उत्तरों की प्रशंसा भी करते हैं जहां आभासी कार्यक्रम के माध्यम से देशभर के बच्चे इस कार्यक्रम को देखते हैं वहीं चुनिंदा छात्र राज्य के राज्यपालों की मौजूदगी में कार्यक्रम देखने के लिए राजभवनों को भी जाकर देखेंगे।

देश भर की राज्य सरकारें भी छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करेंगी। इस कार्यक्रम को जन आंदोलन बनाने और छात्रों के लिए तनावमुक्त परीक्षा सुनिश्चित करने के लिए मीडिया से भी भरपूर समर्थन मिला है ।

परीक्षा पे चर्चा युवाओं के लिए तनावमुक्त माहौल बनाने को लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक बड़े आंदोलन - 'एग्जाम वॉरियर्स' का हिस्सा है।

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम प्रधानमंत्री छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और समाज को एक ऐसे माहौल को बढ़ावा देने के प्रयासों से प्रेरित है, जहां प्रत्येक बच्चे के अद्वितीय व्यक्तित्व का उत्सव मनाया जाता है, प्रोत्साहित किया जाता है और खुद को पूरी तरह अभिव्यक्त करने की सुविधा प्रदान की जाती है।

इसके 5वें संस्करण का आयोजन नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में सुबह 11 बजे से टाउन-हॉल इंटरएक्टिव फॉर्मेट में होगा। जिसमें भारत और विदेशों के करोड़ों छात्र, शिक्षक और अभिभावक भाग लेंगे। जिन छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को प्रधानमंत्री से प्रश्न पूछने का अवसर मिलेगा, उन्हें विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता के आधार पर शॉर्ट-लिस्ट किया गया है।

प्रतियोगिता का आयोजन 28 दिसंबर, 2021 से 3 फरवरी, 2022 तक मायगॉव प्लेटफॉर्म के माध्यम से किया गया था। उन्होंने रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता के लिए इस वर्ष 15.7 लाख से अधिक प्रतिभागियों का पंजीकरण हुआ है ।

मायगॉव इन पर प्रतियोगिताओं के माध्यम से चुने गए प्रतिभागियों को प्रशंसा-पत्र और प्रधानमंत्री द्वारा लिखित एग्जाम वॉरियर्स पुस्तक सहित एक विशेष परीक्षा पे चर्चा किट प्रदान की जाएगी।

यह कार्यक्रम पिछले चार वर्षों से स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है। पीपीसी के पहले तीन संस्करण नई दिल्ली में टाउन-हॉल इंटरएक्टिव प्रारूप में आयोजित किए गए थे।

प्रधानमंत्री संवाद कार्यक्रम का पहला संस्करण **"परीक्षा पे चर्चा 1.0"** 16 फरवरी, 2018 को आयोजित किया गया था। स्कूल और कॉलेज के छात्रों के साथ उक्त विचार-विमर्श कार्यक्रम का दूसरा संस्करण **"परीक्षा पे चर्चा 2.0"** 29 जनवरी, 2019 को आयोजित हुआ था । तीसरा संस्करण 20 जनवरी, 2020 को आयोजित किया गया था। कोविड 19 महामारी के कारण, चौथा संस्करण 7 अप्रैल, 2021 को ऑनलाइन आयोजित किया गया था।

इस कार्यक्रम का दूरदर्शन (डीडी नेशनल, डीडी न्यूज, डीडी इंडिया), रेडियो चैनलों, टीवी चैनलों, एडुमिनोफइंडिया, नरेन्द्रमोदी, पीएमओइंडिया, पीआईबीइंडिया के यूट्यूब चैनलों सहित डिजिटल मीडिया, दूरदर्शन नेशनल, मायगॉवइंडिया, डीडीन्यूज, राज्यसभा टीवी, स्वयं प्रभा पर सीधा प्रसारण किया जाएगा।

भले ही यह सच है परीक्षा देना अपने आप में एक मनोविज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र का विषय है और इस पर सटीक राय मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षक या शिक्षा शास्त्री बेहतर ढंग से दे सकते हैं लेकिन जिस प्रकार से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बच्चों से एक अनौपचारिक संबंध स्थापित किया है उससे बच्चों में उनके प्रति

एक आकर्षण बड़ा है साथ ही साथ परीक्षा के प्रति उनके मन में बैठा हुआ भाई अभी कम हुआ है यदि इस कार्यक्रम को राजनीतिक चश्मे से ना देखा जाए तो यह कार्यक्रम काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है पर साथ ही साथ यह भी सही है कि यदि इस प्रकार के कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर विद्यालय दर विद्यालय कक्षा 10 कक्षा आयोजित किए जाएं जिनमें विशेषज्ञ शिक्षा शास्त्री बच्चों को मार्गदर्शन दें तो शायद दूर-दराज के गांव में बैठे हुए विद्यार्थियों का भी भला हो सकेगा।

"शिक्षा का उद्देश्य तथ्यों को सीखना नहीं होता है बल्कि शिक्षा का मुख्य दिमाग को प्रशिक्षित करना होता है।

"मौन" आत्मा की भाषा है "

मौनं सर्वत्र् साधयते

मौन का अर्थ है बोलने की क्रिया का अभाव। मौन जीवन की शक्ति है। बोलना हमारी स्थिरता में बाधा उत्पन्न करता है, भाषा की अपनी विकृतियां उठती हैं। अल्पज्ञता भी व्यक्ति को अधिक बोलने के लिए विवश करती है।हमारी भाषा मानवीय भावनाओ की अभिव्यक्ति का सहज साधन है ओर साथ ही ये कितनी संमृद्ध भी है लेकिन

अनेकों शब्द ,अनेकों वर्ण ,स्वर,अलंकार से की गई भाषा की अभिव्यक्ति हमेशा ही प्रभावी नहीं होती!

यदि बोलकर अभिव्यक्ति की जा सकती हैं तो चुप रहकर उससे भी ज्यादा , भावनाएं व्यक्त की जा सकती हैं।

हमारे अंतर मन मे तो अनेकों भाव उमड़ते हे |लेकिन ये जरूरी नहीं की हर बार हम सही शब्दो से उन भावो को अभिव्यक्त कर पाये |

जब हमारे शब्द अंतरमन की भावनाओ की अभिव्यक्ति मे कमजोर साबित होते हे, तब मौन ही हे जो बिना कहे सब कह देता है !

मौन एक तपस्या भी हे जो की हमारे भीतर अनेकों अद्भुत शक्तियों को स्वतः प्रवाहित करता हे |बोलचाल की भाषाएं मात्र भौतिक शक्ति से संबंधित होती है, लेकिन मौन आत्मबल की प्रेरणा है। मौन से ही मनोबल मे वृद्धि!

मौन की भाषा शब्दों की भाषा से किसी भी रूप में कमजोर नहीं होती, बस उसे समझने वाला चाहिए साथ ही भावुक हदय । जिस प्रकार शब्दों की भाषा का शास्त्र होता है, उसी प्रकार मौन का भी भाषा विज्ञान होता है, किंतु वह किसी शास्त्र में लिखा हुआ नहीं होता। मौन का भाषा विज्ञान भी मौन ही होता है। इसे समझा तो जा सकता है, पर समझाया नहीं जा सकता। संभवत: इसीलिए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि

“ मौन अनंत की भाषा है। “

कुछ कह देना इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कुछ नहीं कहना। बोलना यदि कला है, तो मौन सर्वश्रेष्ठ कला है। मौन का रहस्य इतना गहरा है कि उसे मौन धारण करने वाला ही समझ सकता है। कुछ कहना बहुत थोड़ा होता है । कुछ भी नहीं कहना बहुत ज्यादा होता है । जो परम सत्य है, उसे कह नहीं सकते जताया तो जाही सकता हे । वेदांती उसे अनिर्वचनीय तथा जैन (स्यात) अवक्तव्य कहते हैं।हमारी प्रकृति मौन हे चंद्र -सूर्य-तारे -आसमान ,पर्वत ,पेड़ जिनहे देख कर आप कई कविता या गीतो की रचना करते हे वे भी तो मौनहैं

बोलने वालों के मायने तय हो जाते हैं, पर मौन रहने वालों के हजार मायने हो सकते हैं। कुछ लोग कहकर कहना चाहते हैं, कुछ लोग बिना कहे ही सब कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन इतना निश्चित है कि बिना कहे जो कहा जाता है, वह कहे गए से इतना ज्यादा बड़ा और महान होता है कि उसे कहा नहीं जा सकता है ।हृदय की भाषा अलग है, उसका तरीका अलग है, जो किसी स्कूल में सिखाया नहीं जाता। संबंध जितना गहरा हो, उतना बोलने की जरूरत कम होती जाती है। फिर अंग-प्रत्यंग बोलने लगता है, और उनकी भाषा ज्यादा ईमानदार होती है। आंखें कभी धोखा नहीं दे सकतीं। स्पर्श कभी झूठ नहीं बोलता, क्योंकि त्वचा ने बेईमानी सीखी नहीं है। और हृदय से निकलती तरंगों को सीधे हृदय में ही उतारा जा सकता है। यदि इस तरह के आदान-प्रदान की आदत डालें, उसे विकसित होने दें, तो लोगों की आधी से अधिक समस्याएं दूर हो जाएंगी। किसी के साथ चुपचाप बैठ जाएं। आपके संबंधों में एक नया आयाम जुड़ेगा।

बृजेश कुमार

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में गांव की उपस्थिति

-डा जियाउर रहमान जाफरी

गजल उर्दू काव्य की सबसे लोकप्रिय विधा रही है! वो भी इस हद तक कि एक समय शायरी का मतलब ही ग़ज़ल समझा जाता था! ग़ज़ल का उद्‌गम चाहे जिस भाषा से हुआ हो लेकिन गजल ने अपनी लोकप्रियता उर्दू में आकर हासिल की! ग़ज़ल का अपना एक लहजा था अपना एक मुहावरा और अपनी एक बुनावट थी! जिसने पाठकों के विशाल वर्ग को प्रभावित किया! उर्दू में गजल एक तरह से प्रेम काव्य थी! उर्दू की गजल जिस स्त्री से बातें करती थी वह केवल प्रेम की बातें जानती थी! गजल जब हिंदी में आई तो उसने पहली बार यह ऐलान किया कि स्त्री सिर्फ प्रेम की ही बातें ही नहीं करती उसके आपने भी दुख- सुख हैं, अपनी जिम्मेवारी है, समाज, राष्ट्र और परिवार के प्रति उसकी अपनी जिम्मेदारियां हैं तब दुष्यंत ने कहा-

वो कर रहे हैं इश्क पे संजीदा गुफ्तगू

मैं क्या बताऊं मेरा कहीं और ध्यान है

जाहिर है शायर का ध्यान उन जन समस्याओं की तरफ था, जो आज तक कम से कम गजल का विषय नहीं बनी थी, तब दुष्यंत ने ही कहा -

मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूं

वह ग़ज़ल आपको सुनाता हूं

कहने की जरूरत नहीं है कि ग़ज़ल राजदरबार से हटकर घरबार की तरफ आ गई थी! गजल में वह सब बातें आने लगी जो किसी कविता का विषय होना चाहिए! दुष्यंत ने ग़ज़ल को किसी सुंदरी के पांव

का पायल नहीं बनाया, बल्कि उसे मशाल बनाकर पेश किया! उनकी गजलों में समाज की बदली हुई परिस्थितियों के प्रति जो बेचैनी और हताशा है उसका मुखर स्वर उनकी लेखनी में दिखाई देता है!

दुष्यंत के बाद से आज तक ग़ज़ल में समाज का पूरा ढांचा दिखलाई देता है! उसमें शहर है गांव है, शहर और गांव की बदली हुई परिस्थितियां हैं! बच्चे हैं, बूढ़े हैं, भूख है, गरीबी है, कहने का अर्थ शायद ही कोई मानव जीवन की जुड़ी हुई घटना हो जिसे ग़ज़ल ने अपना वर्ण्य विषय न बनाया हो! हम चाहे जितने भी शहरी हो जाएं मगर गांव की खूबसूरती अपनी जगह कायम है! यहां का शुद्ध प्राकृतिक वातावरण है, हंसते खेलते और गाते हुए पेड़ हैं, सांस लेने के लिए ताजा हवा है, खाने के लिए शुद्ध भोजन है, सुकून की जिंदगी है, पर्व त्योहारों का अपना आनंद है! गांव और प्रकृति का यह दृश्य शुरू से ही कवियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है!हिंदी गजल का शायद ही कोई शायर हो जिन्होंने अपनी ग़ज़ल में ग्रामीण जीवन का वर्णन ने किया हो! यह गांव हिंदी के कवियों को भी अपनी और आकर्षित करता है--

अहा ग्राम जीवन भी क्या है

थोड़े में निर्वाह यहां है

यह अलग बात है कि गांव की बहुत सारी समस्याएं हैं! शहरों की अपेक्षा गांव का विकास मंद गति से हो रहा है! यहां गरीबी और अशिक्षा भी है! सुविधाओं की भी कमी है. परिवहन मनोरंजन स्वास्थ्य के साधन कम हैं! फिर भी गांव और गांव के लोगों की मासूमियत शायरों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है! जिसकी अपनी वजह भी है, और वो वजह है गांव में मोहब्बत है, सादा दिली है, आपसी रिश्ता है! अपनत्व है रहने सहने के अपने तौर-तरीके है! इसलिए शायर कहता है कि--

मुसलसल फन का दम घुटता है इन अदबी इदारों में

ग़ज़ल को ले चलो अब गांव के दिलकश नज़ारों में

यह गांव ही है जहां मेल और मिलाप है! जिसके आगे हर काम अंजाम पा जाता है! मुनव्वर राणा का एक शेर है कि--

तुम्हारे शहर में मय्यत को सब कांधा नहीं देते
हमारे गांव में छप्पर भी सब मिलकर उठाते हैं

हिंदी के कई शहरों ने गांव के लोगों की सादगी भाईचारगी और प्रेम मोहब्बत का वर्णन किया है! वह भी ऐसा जीवंत वर्णन के मन सहसा गांव की उस खूबसूरती को देखने के लिए लालायित हो जाता है! कुछ शेर गौरतलब हैं --

जिस्म की पुर पेच गलियों में कभी खोया नहीं
प्यार तो नीरज रूहानी है अभी तक गांव में
-नीरज

शहर में जब भी मुझे घर की याद आती है
असल में गांव की मिट्टी मुझे बुलाती है
-हरेराम समीप

प्रेम के कुछ बोल मिल ही जाएंगे
गांव के पनघट पे जा कर देखिए
-अनिरुद्ध सिन्हा

लौट कर चले आओ यह मेरी गुजारिश है
गांव की गली घर में बेबसी नहीं मिलती
-विकास

गांव में कुछ आपसी मनमुटाव के बावजूद भी मोहब्बत का यह चित्र आर पी घायल के इस शेर में देखा जा सकता है--

अभी भी गांव में है दुश्मनी तो भाईचारा भी

मुकदमा जिस से लड़ता है उसे खाना खिलाता है

-आर पी घायल

गांव की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी की है! ग्रामीण रोजगार की चाहत में शहर की ओर पलायन कर रहे हैं! शहर की कृत्रिमता और भागदौड़ उन्हें पसंद नहीं आ रही है! उन्हें गांव की याद आती है! गांव के लोग याद आते हैं! गांव के ताल तलैया और पगडंडी याद आती है! हिंदी के लगभग सभी शायरों ने गांव को छोड़कर जो शहर जाने की मजबूरी है, और महानगरीय जीवन की जो समस्याएं हैं उसका उल्लेख अपनी ग़ज़लों में किया है इस संदर्भ में चंद शेर देखने योग्य है-

गांव के बच्चे घरों में छोड़कर सब्रो सुकूँ

आ गए हम देखिए रोटी कमाने शहर में

-रविकांत अनमोल

हंसते गाते धूम मचाते जिनमें बचपन गुजरा था

शहर में आकर उन गलियों में आना जाना भूल गए

खोल चेहरों पर चढ़ाने नहीं आते हमको

गांव के लोग हैं हम शहर में कम आते हैं

जो मेरे गांव के खेतों में भूख उगने लगी

मेरे किसान ने शहरों में नौकरी कर ली

शहर की इस भीड़ में चल तो रहा हूं

ज़ेहन में गांव का नक्शा रखा है

गांव की ताजा हवा में था सफर

शहर आकर जो धुए में खो गया

-विनय मिश्र

ऐसा नहीं है कि यह गांव पहले वाला है! अब गांव में भी पक्की सड़कें हैं! बिजली है, पानी है, स्कूल है, चिकित्सालय है, लोगों की जरूरत है की चीजें मिल जा रही हैं! हिंदी के कई ग़ज़लकारो ने गांव की बदली हुई इस तस्वीर का जिक्र अपने ग़ज़लों में किया है कुछ शेर द्रष्टव्य हैं -

सावन की पुरवइया गायब

पोखर ताल तलैया गायब

कट गए सारे पेड़ गांव के

कोयल और गोरैया गायब

-देवमणि पांडेय

मुश्किल से मुझको आपके घर का पता चला

घर का पता चला तो हुनर का पता चला

-जहीर कुरैशी

कुंए सूखे, हुई चौपाल सूनी

नई तस्वीर अपने गांव की है

-रामचरण राग

गांव की चौपाल भी है सुनी सुनी आजकल

गांव को भी शहर से आती हवा ने छू लिया

-राहुल शिवाय

गांव की भी आदतों में अब शहर बसने लगा

गांव में भी दिल दुखाना आम मंजर हो गया

-गरिमा सक्सेना

भारत एक किसानों का देश है! यहां की 70% आबादी कृषि पर निर्भर है! यह कृषक पुरुष भी हैं और महिलाएं भी! एक आंकड़े बताते हैं कि भारत में लगभग कुल श्रमिक का 31% महिलाएं हैं! जिनमें 94% असंगठित क्षेत्र में काम करती हैं! ये स्त्रियां अपनी क्षमता से अधिक काम करती हैं! किसान खेतों में फसल उगाता है, वह जमीन भी उसकी अपनी नहीं है! महंगे बीज, मौसम की मार, भारी लगान, इन सबके बीच खेती करने वाला किसान किस तरह खुद भूखा रह जाता है! तनाव से गुजरते हुए कैसे आत्महत्या कर लेता है? हिंदी के कई शायरों ने किसान की इस बेबसी, मजबूरी और दुर्दशा का वर्णन किया है! उदाहरण के लिए कुछ शेर देखे जा सकते हैं-

आप आए तो कभी गांव के चौपालों में

मैं रहूं या ना रहूं भूख मेज़बाँ होगी

-अदम गोंडवी

अब इसी तरह वो रोटी का पता देता है

भूख के गांव में एक चूल्हा जला देता है

-देवेंद्र कुमार आर्य

दर्द की फसल काटने वाला

आंसुओं की लगान दे आया

-सलीम अख्तर

लोग ऐसे भी कई जीते हैं इस बस्ती में

जैसे मजबूरी में एक रस्म निभा ली जाए

-लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

गरीबों के निवाले कौन है जो छीन लेता है

कई ऐसे ही मुद्दों पर सदन चर्चा नहीं करता

-कमलेश भट्ट कमल

गांव की मत पाल तू खुशफहमियां

अब वहां के हाल भी बेहतर नहीं

-हरेराम समीप

अब गांव भी तो शहर से अच्छे नहीं रहे

अब गांव में भी सर पर दुपट्टे नहीं रहे

हिंदी ग़ज़ल की फिक्र गांव की बदली हुई फिजा को लेकर भी है! गांव में जैसे ही शहरीयत हावी हुई! बस्ती के लोगों के तौर तरीके भी बदल गए! मारपीट आम बातें हो गई हैं! जमीन और जायदाद के झगड़े होने लगे हैं! हिंदी के कई ग़ज़ल करों की चिंता में गांव का यह बदला हुआ परिवेश भी मुखर हुआ है चंद शेर मुलाहिजा हो-

गांव मेरा आजकल दहशतज़दा है दोस्तों

इसकी किस्मत में ना जाने क्या लिखा है दोस्तों

-बल्ली सिंह चीमा

इस तरह सहमी हुई है बस्तियां

निर्धनों के घर में जैसे बेटियां

-श्याम वशिष्ठ

आक्रमण की है तैयारियां कर रही

जुल्म के गांव में गम की मारी गजल

-वशिष्ठ अनूप

लहू से चित्रकारी कर रहे हैं

यह बस्ती खूबसूरत बन पड़ी है

-ज्ञानप्रकाश विवेक

हिंदी के कई ग़ज़लकार ऐसे हैं जिनके शेरों में आंचलिकता है!उन्होंने गांव पर बाज़ाब्ता शायरी की है! कुछ की गांव पर मुसलसल ग़ज़लें भी हैं! हिंदी के कई ग़ज़लकार जैसे अनिरुद्ध सिंहा, हरेराम समीप, मधुवेश, विज्ञान व्रत आदि की शायरी में गांव के कई चित्र उभर कर सामने आते हैं! उदाहरण के लिए उनके कुछ शेर भी देखने योग्य है-

किसानी छोड़कर बापू शहर तो जा रहे हो पर

वहां फुटपाथ से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता

-अनिरुद्ध सिन्हा

भूख दे या प्यास दे या मौत दे

गांव की मिट्टी मेरी तकदीर है

-अनिरुद्ध सिन्हा

विज्ञान व्रत अपनी ग़ज़लों में छोटी बहर के लिए जाने जाते हैं उनके कई शेर में गांव का नक्शा उभरा है कुछ शेर देखे जा सकते हैं-

देख शहर में रहना है तो
मन में रखना गांव बचाकर

एक शहर हो जाने में
कितने गांव मरे होंगे

कैसे मिलते हम अपनों से
गांव नहीं लौटे बरसों से

जितने लोग शहर में है
एक मुकम्मल डर में है

ठीक इसी तरह मधुरेश की गजलों में भी गांव के खेत खलिहानों की खुशबू से गांव का पता चलता है-

शहर तक आते-आते सूख जाता है हरा धनिया
हमारे गांव में कैसा महकता था बहुत पहले

जब आई याद गर्मी गांव की तो याद हो आया
जो दीदी ने बुना था हाथ का पंखा बहुत पहले

बताने के लिए तब गांव में थी ही कहां घड़ियां
बताता था समय दीवार का साया बहुत पहले

गांव के अधिकतर लोग खेतिहर मजदूर हैं! इन मजदूरों में कोई जमीदार या जागीरदार नहीं है! खेतों में भी पहले वाली बात नहीं रही अनावृष्टि और अतिवृष्टि ने खेतों को तहस-नहस कर दिया है! राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण की रिपोर्ट मानें तो देश के 40% किसान किसानी छोड़कर अन्य वैकल्पिक रोजगार तलाश करना चाहते हैं! जाहिर है इसके लिए उन्हें नगरों और महानगरों में खाक छाननी पड़ रही है! किसान परेशान है, बाढ़, सूखा तूफानी हवा, भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाएं किसानों को के लिए हमेशा चिंता की वजह बनी रहती है! ये ऐसे हालात हैं जिससे कोई भी संवेदनशील शायर हटकर नहीं रह सकता हिंदी के लगभग सभी शायरों ने इस फिक्र को अपने ग़ज़ल का मौजूं बनाया है कुछ शेर देखने जरूरी है-

प्यार का गांव अजब गांव है जिसमें अक्सर
खत्म होती ही नहीं दुख की गली मीलों तक
-कुंवर बेचैन

आइए गांव की कुछ खबर ले चलें
आंख भर अपना घर खंडहर ले चलें
-रामकुमार कृषक

अच्छे कल की चाहत लेकर
भूखा प्यासा वो सोता है
-लवलेश दत्त

यहां शहर में तुम्हें अन्न भेजता है जो
पता तो कर के वो कैसे किसान जिंदा है
-हरेराम समीप

रोजी रही ना गांव में तो शह्र आ गए
घर अपना कौन शौक से छोड़े है साब जी
-पुरुषोत्तम यक़ीन

ग़ज़ल में प्रेम अपनी जगह मौजूद है! ऐसा नहीं है कि गांव की लड़कियां प्रेम नहीं करती! वह भी प्रेम करती हैं! उसका भी प्रेमी है, लेकिन वह अपने प्रेम को प्रकट करने से डरती हैं उसका प्रियवर भी बस अपनी खबर लेकर दिल की तस्कीन पा लेता है! वह आने जाने वाले से सिर्फ इतना ही पूछता है-

उसने शादी भी की है किसी से

और गांवों में क्या चल रहा है

-तहज़ीब हाफी

भाषा के स्तर पर भी हिंदी गजल के शेरों में जहां गांव का वर्णन है वहां देशज शब्दों का इस्तेमाल भी खूब हुआ है! असल में इन शब्दों से ही ग्रामीण संस्कृति का पता चल पाता है ऐसे कुछ शेर यों हैं -

दाल भात में नून आपका

और उस पर कानून आपका

डिबिया में है धूप का टुकड़ा वक्त पड़ेगा खोलूंगी

आसमान जब घर आएगा मैं अपने पर तोलूंगी

-विनीता गुप्ता

किसानों को अपनी फसलों का वाजिब मूल्य नहीं मिल पा रहा है! उनकी फसल न्यूनतम मूल्य पर खरीद लिए जाते हैं! नए कृषि कानून को किसान मानने के लिए तैयार नहीं है! वह आंदोलन कर रहे हैं किसी भी देश का विकास तब होगा जब गांव का विकास होगा, और गांव का विकास भी तब होगा जब गांव के किसानों मजदूरों और सर्वहारा वर्ग क्या विकास हो पाएगा! देश के लगभग तरह राज्य हर साल सूखे की चपेट में आ जाते हैं! कोरोना ने भी बेरोजगारी और आर्थिक मंदी की समस्या उत्पन्न कर दी है! लोग कोविड के बाद गांव की तरफ लौट रहे हैं लेकिन यहां जीविका का कोई साधन नहीं है! भारत के 1% अमीरों के पास जब देश की 58% संपत्ति हो तो आम लोगों की दशा और दिशा का खुद अंदाजा लगाया जा सकता है! जरूरी है कि गांव में भी सुख सुविधाएं हों, रोजगार हो, चिकित्सालय हो, स्कूल और कॉलेज हों, यातायात के साधन हों! बिजली और पानी हो, ताकि लोग कम खर्च में भी गांव में रहकर अपने जीवन का निर्वाह कर सकें! हमारी कृषि

78% मानसून पर निर्भर है आज भी सिंचाई जितनी महंगी है वह किसानों के लिए मुश्किल खड़ी कर रही है! सरकार भी उदासीन है जरूरी है कि किसानों की समस्या से रूबरू हुआ जाए! हिंदी कविता की तमाम विधाओं में जहां गांव की बदहाली का वर्णन है वहां ग़ज़ल में गांव की बदलती हुई तस्वीर दिखलाई पड़ती है! अब वह गांव ऐसा गांव है जिसमें-

अब के मायूस ही लौटा है खिलौने वाला

एक बच्चा न मिला गांव में रोने वाला

-प्रेम किरण

यह वह गांव है जहां लोग जिस परिस्थिति में भी लौटे हों लेकिन उनके आने की खुशी मनाई जाती है-

गांव गुलजार हुआ लौट आए परदेसी

सूनी गलियों में कोरोना ने रौशनी कर दी

-अमान जखीरवी

अब इस गांव में भी शहर तलाशा जा रहा है-

लाइटर के साथ माचिस है दुकानों पर

इस शहर में ही कहीं देहात भी तो हो

-विनय मिश्र

पहले गांव में कोई डर नहीं था अब गांव में खौफ भी है! निश्तर खानकाही का एक शेर भी है कि-

खौफ जदा थे लोग न निकले देखने करतब सांपों का

आज सपेरा बस्ती बस्ती बीन बजाता चला गया

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समकालीन हिंदी ग़ज़ल में गांव अपनी तमाम खूबियों और खामियों के साथ मौजूद है! कुल मिलाकर गांव की आबोहवा, गांव के लोग, गांव का रहन सहन गांव की जीवन शैली, महानगरीय कृत्रिमता से हटकर विश्व सुंदरी प्रकृति की गोद में हस्ती खेलती हुई दिखलाई देती है!

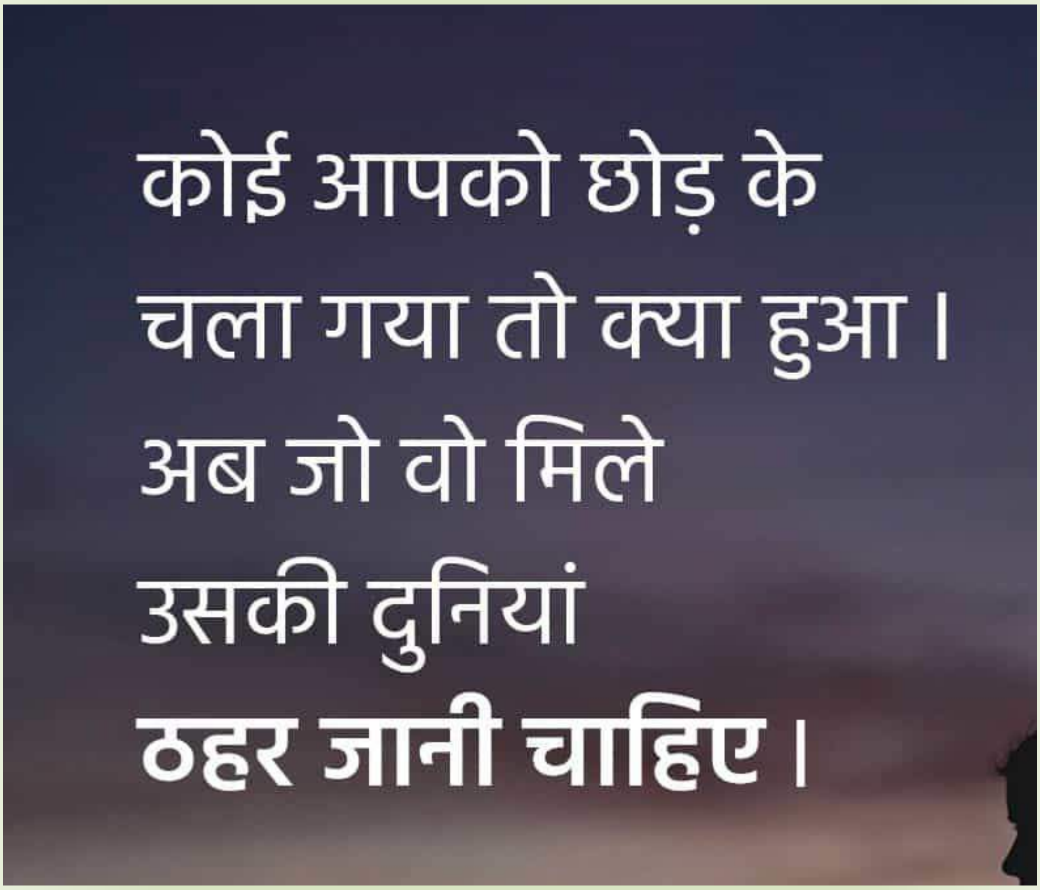

उनकी यादें

अमरेन्द्र कुमार

जब भी हम अकेले तन्हा अपने कमरे में बैठे होते हैं,

वो याद ही तो है जो बिना किसी आहट के अन्दर आ जाती है।

लबों पर हल्की सी मुस्कान और आंखों में नमी दे जाती है।

ये यादें ही तो हैं जो हमारे अकेलेपन की साथी होती हैं,

और कोई हमारे साथ हो या न हो, वो याद ही तो है

जो हमारे साथ जागती और सोती है।

लोग मिलते है और बिछड़ जाते हैं, वो हमें कुछ और दे या न दे

पर वो हमें अपनी कुछ अच्छी तो कुछ बुरी यादें दे जाते हैं।

वो लब से कुछ कहें या न कहें, पर उनकी यादें बहुत कुछ कह जाती हैं।

वो साथ रहें या न रहें पर उनकी यादें हमेशा साथ रहेंगी।

उनसे मुलाकात हो या न हो, फिर भी

उनकी यादों से काम चला लिया करते हैं

वो उनकी यादें ही तो हैं जिनके सहारे हम जी लिया करते हैं।

उनके बिना तो हमने हंसना ही भुला दिया,

पर उनकी यादों ने हमको हंसना और रोना सिखा दिया।

उनके बिना तो ये जिंदगी हो गयी थी अधूरी,

पर उनकी यादों ने कर दी है उनकी कमी पूरी।

लड़की

बचपन से यौवन का
पुल पार करती
कैसे

गौरैया की तरह
चहकती है लड़की

घर में दबे पाँव चलती
भूख से बेखबर
स्कूल में बच्चों के
नाम कुनाम रखती
गौरैया की तरह
लगती है लड़की

अभी उड़ने के लिए

पर तौलती

और दो चार वर्षों में

लाल चुनरी में लिपटी

सखियों के झुंड में घिरी

ससुराल जाएगी लड़की

क्या कायम रह पाएगी उसकी

यह तितलियों सी शोखी

और यह गुलाबी सी मुस्कान

गृहस्थ की तमाम

कठिनाइयों के बीच

बचा के रख पाएगी क्या

वह अपनी सारी मासूमियत ?

कैसे बेखबर आने वाले वर्षों से

गौरैया की तरहचहकती है लड़की..

अमरजीत कौके

तुम मेरे पास रहना

अमरजीत कौंके

हज़ारों आएंगी आँधियाँ
लाखों आएंगे तूफ़ान
लेकिन तुम मेरे पास रहना

अनेक बार मैं होऊंगा
उदासी की खूबसूरत लड़की का हाथ पकड़े,
ख़ुदकुशी की राह पर चलता
इस विष कन्या के होंठों को
चूमने की कोशिश करता
मेरे भीतर सुलगती होगी मौत
तुम मुझे
ज़िंदगी के बारे में बताना

बहुत बार मैं होऊंगा
परिस्थितियों के चक्रव्यूह में घिरा

मेरा अर्जुन पिता लड़ रहा होगा दूर

शकुनि की चालों में उलझा

मेरे इर्द गिर्द होगी

साजिशी तीरों की बरसात

उस वक्त तुम मेरे हाथ में

रथ का टूटा पहिया बन जाना

बहुत बार मैं होऊंगा

तीरों की सेज पर लेटा

देख रहा होऊंगा

अपने ही हिस्सों को

अपने पर बाण चलाते

तब तुम मेरे माथे पर

अपना नर्म हाथ रखना

कितनी बार मैं होऊंगा

बेगानगी की बारिश में भीगता

अपनी अग्नि में सुलगता

भीगी हुई किसी रात को

सीली पवन अपने बदन पे लपेटे

अकेला भटक रहा होऊंगा

तुम मेरा हाथ पकड़ कर

मुझे मेरे घर का रास्ता दिखाना

कितनी बार मैं होऊंगा

टिकी रात को

अतीत के दरवाजे पर दस्तक देता

दूर रह गए घर को याद करता

दीवारों के मिटते रंग देखता

अपने सिर अनगिनत इल्जाम लिए

सिसक रहा होऊंगा

तब तुम मेरी

भीगी आँखों के लिए कंधा बन जाना

हज़ारों आएंगी आँधियाँ

लाखों आएंगे तूफान

लेकिन तुम मेरे पास रहना.....

उम्मीद की उपज

कवि गोलेन्द्र

उठो वत्स!

भोर से ही

जिंदगी का बोझ ढोना

किसान होने की पहली शर्त है

धान उगा

प्राण उगा

मुस्कान उगी

पहचान उगी

और उग रही

उम्मीद की किरण

सुबह सुबह

हमारे छोटे हो रहे

खेत से!....

"इस मौसम में ओस नहीं आंसू गिरता है"

कवि गोलेन्द्र

एक किसान

बारिश में

बाएं हाथ में छाता थामे

दाएं में लाठी लिए

मौन जा रहा था मेंड़ पर

मेंड़ बिछलहर थी

लड़खड़ातेसंभलते-

अंततः गिरते ही देखा एक शब्द

घास पर पड़ा है

उसने उठाया

और पीछे खड़े कवि को दे दिया

कवि ने शब्द लेकर कविता दी

और उस कविता को

एक आलोचक को थमा दिया

आलोचक ने उसे कहानी कहकर
पुनः किसान के पास पहुँचा दिया
उसने कहानी एक आचार्य को दी
आचार्य ने निबंध कहकर वापस लौटा दिया

अंत में उसने वह निबंध एक नेता को दिया
नेता ने भाषण समझ कर जनता के बीच दिया

जनता रो रही है
किसान समझ गया
यह आकाश से गिरा
पूर्वजों का आँसू है
जो कभी इसी मेंड़ पर
भूख से तड़प कर मरे हैं
इस मौसम में ओस नहीं
आंसू गिरता है!

कविता

कविता होती है
अपने समय का प्रत्युत्तर
बुद्धिजीवियों की मौलिकता को
बनाती है वृहत्तर
कविता
अतीत के चिह्नों को मिटाती नहीं
वर्तमान का समर्थन जुटाती है
सुस्थापित को हटाती नहीं
कविता उत्कृष्ट कला है
किंतु उसको
व्यवसाय ने छला है
आज समाज में
कवियों की स्थिति
बहुत अच्छी नहीं है

सम्मान - पुरस्कार की दौड़

शतप्रतिशत सच्ची नहीं है

कुछ कवि भूखे मर जाते हैं

कुछ कवि से कमाते हैं

कुछ कविता के साथ - साथ

दूसरे काम भी करते हैं

कुछ कवि निर्वासन में जीते हैं

कुछ अपकीर्ति का विष पीते हैं

रोकना होगा कविता का पतन

पात्र की गुणवत्ता बढ़ाएँ

न केवल आयतन

कविता भूख हैभोजन नहीं ,

जीवन हैजीविका का ,

आयोजन नहीं

कविता पथ हैयात्रा नहीं ,

फल का रस हैमात्रा नहीं ,

गौरीशंकर वैश्य विनम्र-

गीत-1

कौन मानेगा ?

कौन समझा?प्यार तो होता रहा हर दौर में बदनाम!

कौन मानेगा सखे,इक रात हम तुम साथ होकर।

भीगते एकांत में, बहके न होंगे होश खोकर।।

कौन मानेगा,उमर की प्यास फिर दहकी न होगी।

कौन मानेगा हमारी कामना महकी न होगी?

लाख प्यासे तट मरें,पर सिन्धु,नदिया का उछाले नाम !—1

झूमते पत्ते शराबी, बोल दोहरे बोलते हैं।

तितलियों के होंठ सूजे,भेद सारे खोलते हैं।।

कौन मानेगा कि तुम बस आँख में आंसू लिये थीं।

पत्र फेरे थे सभी, फिर मुँह फिराये,मुँह सिये थीं?

इस नशे में बिन पिये ही तो उपासे होंठ पर लगते रहे इल्जाम!---2

तीर्थ पा जाता विरागी रात पर उससे,अभागी।

जिन्दगी नासूर कर दीरात ऐसी बात दागी।।,

कौन मानेगा नशीली रात के भीगे मिलन में?

भावना में?कौन जीता है जलन में,वासना में,

स्वार्थ को कह वेवशी खुद छाँव ही मेरी हुई उस रात कर्री घाम 3---!

आँख मुँदने तक बरसना ही बचा हम बादलों का काम!!!!!

अरुण तिवारी

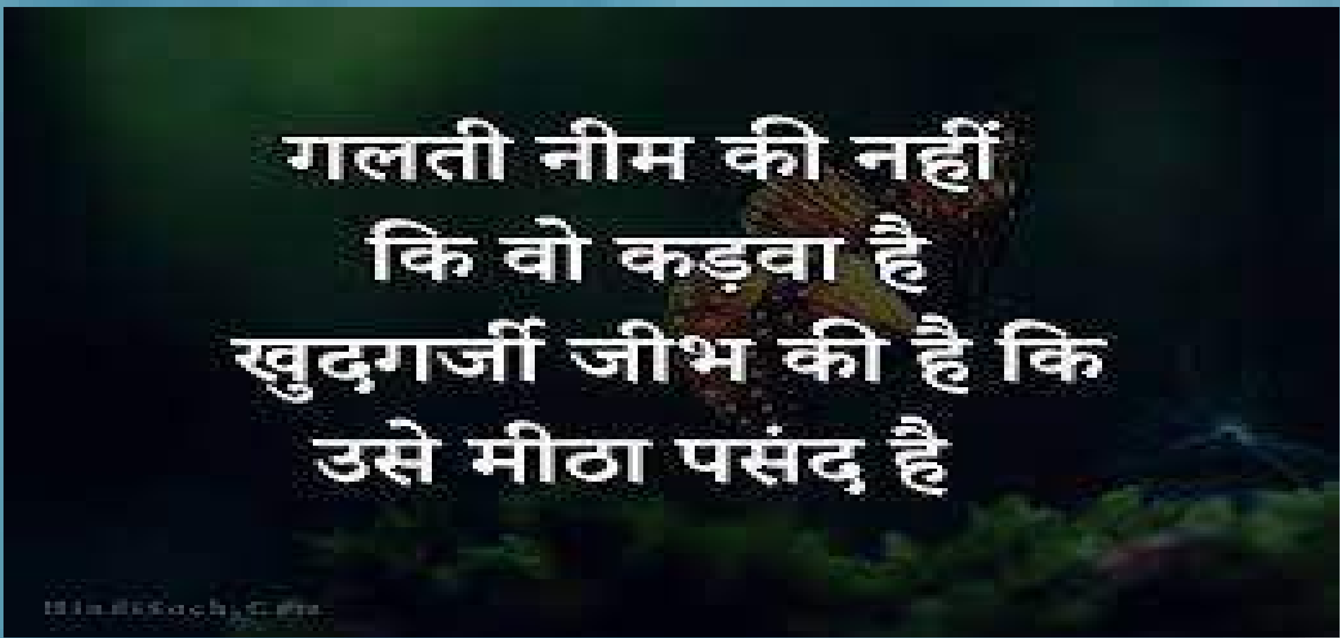

गीत-2

मिलन का विश्वास अक्षयवट हुआ है ....

दर्द पूरा गा रहा हूँ और आधा प्यार..डूब जाते,गीत ही केवट हुआ है....

अर्घ्य चाहों के लिए प्यासी नदी !

रूप में खुलकर नयन में जा मुदी !!

दो नयन जोगी जनम के ,हेरते हैं द्वार...प्रेम ही तो जोगियों का हठ हुआ है ...1

निभ कहाँ पाये तुम्हारे दो वचन!

डबडबाये फिर नहाये दो नयन !!

बिन पढे जो पत्र लौटाया,बरोठे पार...रोज आँखे डूबने का तट हुआ है ...2

दाग तुमने,जिन्दगी,की बाँसुरी!

भर नयन हर द्वार वो गाती फिरी !!

सौ तरह ,दुनिया करे,सौ सौ जतन...मिलन का विश्वास अक्षयवट हुआ है..3

अरुण तिवारी

रज में सिमटते रिश्ते

डॉ प्रणव भारती

पचास वर्ष की उम्र में आखिर ज़रूरत क्या थी सोचने की कि उसका नाम रेणु क्यों रखा गया होगा ? माँ रेणुका थीं ,अपने नाम से ही आधा नाम काटकर जैसे माँ ने उसे नाम दे दिया था |दोनों का अर्थ एक ,दोनों का भाग्य जैसे एक ही डोरी से बँधा–लेकिन ऐसा तो नहीं था |

यूँ तो कोई अजूबा नहीं,माँ अपने जिगर के टुकड़े को अपना नाम दें तो इसमें अजूबा क्या ?लेकिन रेणु ? आखिर रेणु ? यानि रज,बालू ? शायद माँ को उसके भविष्य का अंदाज़ा लग गया था लेकिन ---

रिश्तों की टूटन की कगार पर खड़ी रेणु की आँखों से टपटप आँसुओं का सैलाब बह - निकला| बंगले के बरामदे में खड़ी वह धूल उड़ाती गाड़ी को देखने लगी |'ये ही तो हैं वो' धूल के ऐसे कण जिन्हें समेटना कठिन ही नहीं नामुमकिन है |

महसूस तो वह काफ़ी दिनों से कर रही थी,बदलाव के रूप में चिंदीचिंदी हुए मन की - लेकिन इस--- कतरें उसके सामने उड़ती रहीं थीं लेकिन,पर,परंतु में आदमी उम्र भर चक्कर लगाता रहता है | अंत में शेष रहता है एक बड़ा सा वृत्त जिसमें घूमते हुए वह ख़ुद पर ही --- हँसता है,ख़ुद का ही मज़ाक उड़ाता है,फिर थककर उसी वृत्त में सिमट जाता है |

वह थककर टूटने सी लगी,लगा,उसका जोड़ है जोड़ बिखरने के कगार पर-|भय से उसने बरामदे में लटके बाँस के झूले पर अपने आपको लगभग पटक दिया | गाड़ी के पीछे से उड़ती धूल उसे अपने साथ पीछे बहकर ले चली |

सत्रह वर्ष की रेणु डॉक्टर पिता के पीछे सहमी खड़ी थी | रेणुका---यानि रेणु की माँ ने एक बेटे को जन्म दिया था | रेणुका के गर्भ धारण करने के समय डॉक्टर साहब कितने सकुचा गए थे |उनकी पत्नी ने विवाह के बाद और आगे पढ़ने की इच्छा ज़ाहिर की | यूँ तो कठिन था परिवार व बच्चे के साथ शिक्षा को आगे बढ़ाना किन्तु डॉक्टर की माँ जिन्होंने अपने पति को किशोरवस्था में ही खो दिया था ,वास्तव में डॉक्टर भी 'posthumous

child' थे | उनकी माँ के गर्भाधान के सात माह बाद ही उनके पिता चल बसे थे |

संयुक्त परिवार में डॉक्टर की माँ की हालत एक बिन जल मछ्ली की तरह हो गई थी,वह हर समय तड़पती रहती और इसी तड़पन ने मानसिक दबाव के कारण समय ने उनकी गोदी में वह बेटा डाल दिया जिसको अभी गर्भ में दो माह तो और रहना चाहिए था | बेटे को देखकर सास का दिल पसीजा लेकिन सास भी युवावस्था में अपने पति को खो चुकी थीं | उनके ऊपर उनके देवरों का राज चलता | चाहते हुए भी वे अधिक कुछ न कर पातीं | बाद में पता चला कि उसकी सास के दोनों देवरों ने न केवल उनके पति की जायदाद झड़पी थी ,शरीर से भी उनको रौंदा था और वे सहमी हुई सी उस महल जैसे घर के कोने में दबी हुई पड़े रहने के लिए विवश थीं |

जब उन्होंने देखा कि उनकी बहू पर भी उनके दोनों देवरों और देवर के किशोर होते हुए लड़के की नज़र है ,उन्होंने उसे वहाँ से भाग जाने की सलाह दी | लेकिन जाए कहाँ ? सवाल बड़ा था और उसका उतर उससे भी अधिक कठिन बारहवीं पास थीं रेणुका की सास! ,इतने में उन्हें कहाँ और क्या काम मिलता ?वे गोदी के बच्चे को लेकर अपनी करीबी सखी के पास देवबंद आ तो गईं लेकिन किसीके पास कितने दिन रहा जा सकता था? मातापिता - थे नहीं,भाई बहन प्रारब्ध में लिखवाकर आई नहीं थीं-|मौसा ने पाला था ,मौसी उनकी नज़र भी ताड़ चुकी थीं |इसीलिए उन्होंने अच्छा लड़का देखकर उनका विवाह जल्दी ही कर दिया था| लेकिन वह सुख भी उनके भाग्य में नहीं था |

रेणुका की सास की मित्र के पिता देवबंद शुगर मिल में काम करते थे | शरीर से अपंग उसके पिता विशेष रूप से तीन पहियों की साइकिल पर मिल में काम पर जाते थे |वे वहाँ बरसों से कैशियर थे और उनके मिल मालिक व अन्य सभी उनका बहुत सम्मान करते थे |

रेणुका की सास शानी की मित्र कृष्णा ने अपने पिता से बात की और ईश्वर की कृपा से शानी को मिल में उनके असिस्टेंट के रूप में रख लिया गया | हालाँकि शानी के अलावा इतने बड़े मिल में उसके अलावा कोई स्त्री कर्मचारी नहीं थी लेकिन शानी के लिए काम करना बेहद ज़रूरी था और वहाँ कम से कम उसके लिए कृष्णा के पिता तो थे जिनकी देख-रेख में वह काम सीख रही थी|

शानी को अपने बेटे को साथ ले जाना पड़ता | वहीं एक पेड़ में सूती साड़ी से झूला बनाकर वह अपने बच्चे को सुला देती |कृष्णा की माँ के पास बच्चे को छोडकर जाना संभव

नहीं था | ख़ैर,समय बीतता गया ,बच्चा बड़ा होता गया | शानी को मिल में भी बहुत सी तीखी नज़रों का सामना करना पड़ा लेकिन फिर भी वह बेहतर स्थिति में रही |

अपने बेटे का नाम हृदय रखा था उन्होंने | वह बड़ा होता रहा और शानी काम के प्रति और गंभीर होती रही|हृदय पढ़ाई बहुत मन लगाकर करता | उसने बहुत बार अपनी माँ से पिता के दिल के दौरे के बारे में सुना था | उसके मन के किसी कोने में डॉक्टर बनने की इच्छा पनपती रही और वह प्रथम श्रेणी में सदा आगे और आगे बढ़ता रहा |

कृष्णा के पिता की क्रमश उम्र बढ़ती जा रही थी :,उन्होंने अपने मालिक से कहकर शानी को 'हैड ट्रेजरार' बनवा दिया | अब वे आराम करना चाहते थे |शानी काफी समझदार हो चुकी थी और पूरी मिल का एकाउंट संभालने लगी थी | बेटे ने पूरे राज्य में टॉप किया ,शानी की मेहनत वसूल हो गई |पैसा बचा बचाकर शानी ने बेटे हृदय को डॉक्टर बनाया-| उसे 'हार्ट सर्जन' बनने में विशेष रुचि थी | अपने श्रम से उसने वह डिगरी भी हासिल की और उसे मेरठ के एक अच्छे अस्पताल में नौकरी मिल गई |

अब सपने पूरे होने की बारी थी | हृदय अब माँ को काम नहीं करने देना चाहता था | वह माँ को अपने साथ मेरठ ले गया जहाँ उसकी मुलाक़ात रेणुका से हुई | रेणुका अपनी माँ के साथ उनका हार्ट चैकअप करवाने आई थी-| कमाल था माँ ने उसे कई सुंदर लड़कियाँ ! दिखलाईं लेकिन उसे सुंदरता नहीं बुद्धिमत्ता,व संवेदनशीलता प्रभावित करती थी | माँ ने जीवन में जो कष्ट उठाए थे,उनके लिए वह ऐसी पुत्रवधू लाना चाहता था जो उनकी सारी पीड़ा पर मलहम लगा सके | न कि उसके डॉक्टरी के तमगे के नीचे केवल अपनी ही अपेक्षाओं को फलित करे |

समय का चक्र है और जैसा कहा भी जाता है कि रिश्ते कहीं ऊपर से बनकर आते हैं |हृदय डॉक्टर था लेकिन बहुत संवेदनशील था | माँ की आँख का एक भी आँसु उसे असहज कर जाता |दैवयोग ही कहा जाएगा कि रेणुका की माँ को भी हृदय बहुत पसंद आया और वे अपने पति के साथ हृदय की माँ से मिलने चली गईं | रेणुका को भी हृदय पहली बार में ही पसंद आ गया था लेकिन वह एक अध्यापिका बनना चाहती थी इसलिए अभी विवाह नहीं करना चाहती थी | हृदय की माँ उसकी शिक्षा में रुचि देखकर बहुत प्रसन्न हो उठीं और उन्होंने रेणुका से वायदा किया कि उसके शिक्षण में बाधा नहीं बनेगी | वह जितना चाहे पढ़ सकती है |मुश्किल था।इस प्रकार विवाह के बाद शिक्षा में जुड़े रहना लेकिन बला का जुनून

था रेणुका में इसलिए शानी ने उसको ढाढ़स दिया कि वह सदैव उसके साथ रहेंगी |बात बड़ों के बीच में ही पक्की हो गई और झट मंगनी ,पट ब्याह हो गया|

सब ठीक हो रहा था | हृदय को 'हार्टस्पेशलिस्ट-' के रूप में बहुत ख्याति मिलने लगी | जो लोग दिल के ऑपरेशन के लिए मद्रास जाते थे, वे भी अब डॉक्टर हृदय के पास आने लगे थे |हृदय ने अपना प्राइवेट क्लीनिक भी खोल लिया था | अस्पताल तो वह जाता ही था ,खूब प्रसिद्धि प रहा था |

प्रकृति अपना काम करती है | रेणुका गर्भवती हो गई उदास रहने लगी | उसकी सास शानी ने उसे समझाया कि वह उसके साथ हैं और हर स्थिति में उसका साथ देंगी |समय पर रेणुका ने एक प्यारी सी बिटिया को जन्म दिया और दादी के साथ माँ को भी सब कुछ भूलने पर मजबूर कर दिया |रेणुका ने उसका नाम अपने नाम में से निकालकर रेणु रखा |

रेणुका की उदासी देखकर शानी बहू को समझा ही सकती थी लेकिन रेणुका के मन में पढ़ाई बीच में रुक जाने का भय उसे सहज नहीं रहने देता था| वह रेणु के लिए सब कुछ करती लेकिन पढ़ाई से अब भी विलग नहीं हुई थी | सोचती, कब रेणु बड़ी होगी और कब वह फिर से अपनी पढ़ाई फिर से शुरू करेगी ?रेणुका ने कमर कस ली थी कि आगे पढ़ना ही उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य है |

रेणुका की उदासी देखकर शानी ने बहू को पढ़ने के लिए छूट दे दी तो उसका चेहरा गुलाब की तरह खिलने लगा |बेटे ,माँ ने आपस में चर्चा करके अपने कंपाउंडर शंकर की पत्नी को रेणु की देखभाल के लिए रख लिया था | इतने वर्षों में हृदय ने मेरठ में ज़मीन ख़रीदकर एक सुंदर सा बंगला बना लिया था | उसीमें पीछे की ओर एक ओर पोर्च था तो दूसरी ओर आउट उसी आउट हाउस में शंकर पत्नी सहित रहने आ गया था ! हाउस-| एक ओर रेणु बिटिया के लालन पालन के लिए सुविधा हो गई तो दूसरी-ओर शंकर को भी गाँव से आई अपनी पत्नी कमला की चिंता कम हो गई |

रेणुका की शिक्षा फिर से शुरू हो गई थी और वह फिर से बहुत खुश दिखने लगी थी | इस सबमें लगभग तीन साल बीत चुके थे | रेणुका को एम ए करना था.,उसके बाद पी एचडी. | घर का सारा काम सँभल जाता था इसलिए कोई परेशानी नहीं होती थी |

लगभग सात साल में रेणुका के हाथ में पीएचडी की डिगरी आई और वह फूलों सी . खिल उठी|उसे शहर के डिग्री कॉलेज में अध्यापिका की नियुक्ति मिल गई थी | शानी की

खुशी का ठिकाना नहीं था | अपनी बहूपार्ट बेटी की सफ़लता पर उन्होंने एक ज़बर्दस्त-ी दे डाली |

अब तक पति डॉक्टर हृदय बहुत व्यस्त हो चुके थे| जहाँ तक हो वे परिवार को समय देने की कोशिश करते थे |कुछ वर्षों बाद शानी भी इस दुनिया को छोड़ देवलोक पहुँच गईं |एक अकेलापन सा घर में पसर गया,एक उदासी बिछ गई | लेकिन दुख हो अथवा सुख सबका समय बदलता ही है |माँ शानी की स्मृति में रेणुका उदास हो उठी थी लेकिन व्यस्तता ने सबके जीवन को फिर से आगे बढ़ाना शुरू किया |शंकर और कमला इस घर के सदस्य ही बन चुके थे | व्यस्तताएँ थीं ,साँस लेने की फुर्सत नहीं थी,सब अपने काम में उलझे थे लेकिन परिवार में स्नेह भरपूर था जिससे दो घड़ी चैन की साँस ले सकते थे डॉक्टर हृदय !|

विवाह के लगभग अट्ठारह वर्ष बाद रेणुका को फिर से गर्भ ठहर गया | हृदय और रेणुका को काटो तो खून नहीं इतनी बड़ी गलती !? गलती ही थी ।न तो कोई प्लानिंग थी और न ही कोई आवश्यकता | रेणु उनकी बिटिया सुंदर युवती बनकर उनके सामने थी | होनी को कोई नहीं रोक सका है |यह होनी डॉक्टर के समक्ष एक अजीब सी चुनौती बनकर आई थी |

रेणुका ने बेटे को जन्म दिया और साथ ही ब्लड प्रेशर के बहुत कम हो जाने से इस दुनिया से कूच कर गई | डॉक्टर साहब अपने नवजात बेटे को अपने हाथों से अपनी युवा होती टीन एज बेटी के हाथों में पकड़ाकर पत्नी के क्रियाक्रम में व्यस्त हो चुके थे-| सत्रह वर्ष की बिटिया के हाथों में नवजात भाई था और वह अपने कर्तव्य के बारे में सोच रही थी |

पत्नी के बिना हृदय जैसे टूट गए थे | शंकर व उसकी पत्नी कमला साथ थे लेकिन अपनी बच्ची पर छोटे भाई की ज़िम्मेदारी देखकर उनका मन चिंदी चिंदी हो गया था-|

समय कभी नहीं रुकता ,उसे चलना ही है | रेणु अपनी माँ की जगह ले र ही थी | जो अब तक कुछ भी नहीं जानती थी अचानक ही समय ने उसे कितनी बड़ी परीक्षा में डाल दिया था |अपनी पढ़ाई के साथ उसे अपने भाई का भी ख्याल रखना था और पापा की उदासी भी दूर करनी थी | अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद भी डॉक्टर डिप्रेशन में आ गए | उन्होंने सर्जरी बंद कर दी | पैसा इतना तो था ही कि वे अपने कर्तव्यों को पूरा कर सकें | अब केवल कंसल्टेंसी करते थे | धीरे धीरे वे क्षीण होते चले गए-| रेणु सबका ध्यान रखती | शंकर और कमला की उम्र भी बढ़ रही थी |

लगभग दस वर्ष का था मनु जब डॉक्टर पिता ने भी इस दुनिया से बिदा ली | उन्हें एक ओर युवा बच्ची के समक्ष इस उम्र में पिता बनने का संकोच रहता था तो दूसरी ओर बेटी की चिंता रहती | पत्नी को तो वे खो ही चुके थे जिससे मन की बात साझा कर सकते |रेणु भी माँ जैसी ही थी ,उसकी भी शिक्षिका बनने की इच्छा थी | उसने अपने भाई का ध्यान रखते हुए अपनी शिक्षा के प्रति भी गंभीर बनी रही |अँग्रेज़ी साहित्य में एमए करके . एचडी की और उसी डिगरी कॉलेज में उसे अपनी सेवाएं देने का .उसने भी माँ की भाँति पी अवसर मिला|

गाड़ी फिर धीमी रफ्तार से चल रही थी लेकिन उसके पास दूसरा पहिया नहीं था |अनमनी तो रहती लेकिन व्यस्त रहने का प्रयास करती |मनु को कोम्प्यूटर करना था | रेणु ने उसकी यह इच्छा भी पूरी की | उसे हर पल यह महसूस होता कि वह उसकी माँ है और उसके लिए सब कुछ करना उसका कर्तव्य है | किन्तु उसके लिए सोचने वाला कोई न था |

शंकर और उसकी पत्नी बहुत वर्षों तक उसके पास थे ,लेकिन बाद में उन्हें काम करने में परेशानी होने लगी | उसके समझाने से ही वे दोनों अपने गाँव चले गए | अब इतना बड़ा घर था और उसमें दो लोग घूमते रहते थे| कुछ वर्षों बाद मनु ने अपनी यहाँ की पढ़ाई पूरी की और विदेश जाने की रट लगा ली | वह उससे ऐसे ही ज़िद करता जैसे बच्चे माता-पिता के सामने करते हैं| रेणु ने तब भी चुप रहकर अपना कर्तव्य निभाया | जाती भी किसके पास अपने मन की बात साझा करने ?उसने अपनी शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से की थी ,उसका मन हुआ अथवा उसे समय मिला तो वह बहन के पास मेरठ आ गया वरना वह भला ,उसका काम भला ! बहन की ज़रूरत उसे पैसों के लिए थी ,उसके आगे कुछ नहीं !

मनु पच्चीस वर्ष का होने लगा था और वह लगभग पैंतालीस की | मित्र थे ,जिनमें से कई ने उसे विवाह का प्रपोज़ल भी दिया था | किन्तु उसके सामने मनु था ,वह हरदम उसके बारे में ही सोचती | और एक दिन मनु अपनी मित्र को साथ ले आया| दोनों विदेश आईटी . का कुछ एडवांस कोर्स करने जाना चाहते थे|वह गुम हो गई | बिना कुछ पूछे ,कहे उसने मनु का सारा प्रबंध कर दिया | जब स्वयं ही मनु कुछ नहीं समझ पाया तब उसके कहने से वह क्या समझ पाता ? वह विवेकशील थी ,सब समझती थी लेकिन उसने रोना नहीं सीखा था|

मनु जब विदेश जाने के लिए तैयार हो रहा था ,रेणु ने बस एक बार पूछा था कि क्या

वह उस मित्र को अपना जीवन -साथी बनाना चाहता है ?

देखते हैं“?”मनु ने कंधे उचका दिए और वह चुप बनी सब तमाशा देखती रही थी |

मनु चला गया और अपने पीछे छोड़ गया रेणु के मन में एक लंबी प्रश्नों की पंक्ति | पहले कभी कभी उसके फ़ोन भी आते रहते-,बाद में वही कर लेती तो ठीक वरना वह व्यस्त ही था |

लगभग पाँच वर्षों बाद वह अचानक आया ,उसके साथ उसकी वह मित्र भी थी जो उसकी पत्नी के रूप में थी |रेणु के पास कुछ कहने को था ही नहीं | मनु ने ही बताया कि वे दोनों भारत भ्रमण करना चाहते हैं-,जब तक वापिस लौटें बंगले का उसके भाग का सौदा कर लीजिएगा |

गाड़ी धूल उड़ाती जा रही थी और वह यही सोच रही थी कि माँ ने क्या सोचकर उसे अपने नाम का आधा हिस्सा पकड़ाया होगा? मन के किसी कोने में से आवाज़ उठ रही थी कि वह डॉक्टर पाठक से अब बात कर ही लेगी जो बीस वर्ष से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं | ज़िंदगी के अंतिम प्रहर में ही सही,वह अपने लिए जीएगी | इस उड़ती हुई रेत को समेटकर तो देखे |

उसकी आँखों में अचानक ही एक प्रकाश सा भर उठा |

रिश्तें वो बड़े होते है जो दिल से जुड़े होते है !!

जहां विश्वास होता है वहां रिश्ते अपने आप बन जाते है !!

लेकिन दिल के जज़्बातों से बनने वाले रिश्ते ही सच्चे होते है !!

मुझसे भी तो पूछा होता

डॉ शिवा धमेजा

सुबह हो गयी !आज मुझे रिपोर्ट सबमिट करनी है ! लगभग जगी जगी ही सोती रही रात भर ! दुनिया समय से कुछ देरी से काम करने की आदि होती है और मुझे बीमारी है समय से पहले करने की ! और हर चीज परफेक्ट होनी चाहिए ! कपड़े, जूते, बैग और फेस चमकता हुआ, साफ सुथरा ! अच्छे खासे खादी के कुरते पहनने की हमेशा से आदत है ! सो वही निकाला और टाइम पर बाहर निकल सकूँ तो सब कुछ व्यवस्थित दिनचर्या के अनुसार !

खूब सारी किताबें बैग में अच्छी तरह सेट की ! मानो एक ही दिन में जाने कितना पढ़ना है !किताबें ऐसी दोस्त है मेरी बस्ते में छुपा लो और ज़ब मर्ज़ी करें जिससे बात कर लो, बाहर से क्या मिलता है कोई परवाह ही नहीं होती थी ! बच्चों का चॉकलेट का शौक और मेरा किताबों का एक बराबर था !

समय हो या पैसे ज़ब मम्मी पापा के दिए होते हैं ना तो किसी बादशाह से कम नहीं होते हम ! खुद कमाने लगते हैं तो जो भी हो कम ही लगता है ! मम्मी से मिला सारा समय अपने दोस्तों से बातें करने में लगा देती थी मैं और सबसे गहरे दोस्त मेरे बैग में होते थे ! मैं बड़ा ध्यान रखती थी!

मैंने बैग पैक किया और यूनिवर्सिटी रवाना हो गयी ! मुझे ऐसा लगता है कि जैसे सारा जहाँ मेरी मुट्ठी में है !

बहुत पढ़ सकूँ बस एक ही ख्वाहिश है,....... मैं इसके सिवाय किसी बात में रूचि नहीं रखती थी ! दीवानापन था पढ़ाई के लिए ! इधर घर में खट्टा मीठा सब होता था ! थोड़ी लड़ाई थोड़ा प्यार ! एक छोटा भाई और दो बहन ! घर में बुआजी छोटी और बड़ी दोनों का आना जाना लगा ही रहता था ! और ज़ब वो आती तो जैसे मेला देखने बाहर जाने की जरूरत ही नहीं ! हमारा तीन मंज़िल का टूटा फूटा घर, राजा महाराजा के महल की तरह रौनक भरा हो जाता था ! घर की दीवारें तो वैसी ही होती थीं लेकिन ज़ब बुआ जी, उनके बच्चे, हम और चाची जी का परिवार एक साथ होते तो लगता जैसे रोज़ पिकनिक हो रही है "! इतनी मस्ती, हसीं मज़ाक, खाना पीना, घूमना होता था ! बड़े हो या छोटे जैसे किसी के कदम ज़मीन पर नहीं होते थे ! सयुंक्त परिवार की सुंदरता जिसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती ! ! इस

मजबूती क़ो किसी तरह कमजोर नहीं किया जा सकता ! इतना प्रेम की चाची मेरे छोटे भाई क़ो खाना खिलाती और मेरी मम्मी उनकी बेटी भारती क़ो!

चलते चलते न जाने कब छोटी छोटी बातें बड़ी होने लगी ! आपसी प्यार और अपने पन में कही गयी बातें चुभने लगी !

वो उमंग और आनंद चीज़ों के बटवारें की भेंट चढ़ गया ! ये मेरा है, ये तेरा है ! इस भाव ने वो कीमती खुशियाँ बहुत सस्ते दामों में नीलाम कर दीं ! धीरे धीरे सब अलग अलग हो गये !सबको लगा हम अलग खाएंगे तो आज से अच्छा होगा ! हमारी कमाई क़ो हम ही इस्तेमाल करेंगे उसमें से किसी पर भी कुछ खर्च क्यों करें ! सब कुछ जो एक साथ था, इन छोटे विचारों की भेंट चढ़ गया ! टूटते समय ये एहसास ही नहीं होता है कि क्या छूट रहा है !असल में जो कुछ होता है हमारे पास उसकी अकसर कोई कीमत ही नहीं होती ! और जो नहीं होता उसे हम पाने की कोशिश में लग जाते हैं !

एकाकी पन कुछ समय के लिए अच्छा लगता है, उसी में हम अपनी जीत समझने लगते हैं !

जो हरा भरा वृक्ष था, डाली डाली में विभक्त हो गया ! सबने अपनी अपनी जड़ों क़ो अलग मिट्टी दे दी !

रौनक की जगह शांति ने ले ली ! हम दादाजी दादी, के वृहद बट वृक्ष से छोटे छोटे गमलो में रोप दिए गये ! इसी उम्मीद में कि वृक्ष बन जायेंगे !

बहुत धैर्य होता था माँ में मेरी,........ अब वो धैर्य कहाँ ? अब तो खुद क़ो सही साबित करने लगता है हर कोई ! जैसे ही गलती बता दो ! नई पीढ़ी....... बाहर से मज़बूत और भीतर से खाली खोखली है क्योंकि उसे ऊंचे मकान मिले हैं ऊँचे संस्कार नहीं !

काश कि किताबों का ज्ञान दिमाग़ के साथ कुछ दिल में भी उतरा होता तो, जीवन की असली सुंदरता कम नहीं होती ! हम टूटे हुए क़ो जोड़ते ना कि जुड़े हुए क़ो तोड़ते !

मैं अब घर के रास्ते पर चल रही थी...... घर में अब एकाकीपन तो है लेकिन आनंद नहीं !

पढ़ाई से प्यार बहुत किया पर विचारों की विभिन्नता क़ो एक करने में वो ज्ञान काम न आ सका !

किसी ने पूछा तो होता कि क्या अच्छा क्या बुरा है मगर पूछा नहीं,

बस फैसला सुना दिया !

किसी ने पूछा होता तो मैं कह देती कि विशाल बरगद की डाली क़ो विशालता उस वृक्ष की जड़ से मिलती है ! टूटना कभी अच्छा नहीं होता और जुड़ना कभी बुरा नहीं होता ! सबने बच्चा समझा और निर्णय बड़ो ने किये.........................

हम खड़े खड़े देखते ही रह गये !

जीवन में शांति चाहते हैं तो दुसरों की शिकायतें करने से बेहतर है खुद को बदल लें। क्योंकि पुरी दुनिया में कारपेट बिछाने से खुद के पैरों में चप्पल पहन लेना अधिक सरल है।

ग़ज़ल

डॉ राकेश जोशी

ख़ूब मुनादी करवा दी हैजश्न मनाओ ,
बस्ती में कल फिर शादी हैजश्न मनाओ ,

सबसे नीचे दबी हुई है जनता सारी
सबसे ऊपर तो खादी हैजश्न मनाओ ,

लोकतंत्र में लोक कहाँ हैये मत पूछो ,
अपनी तो चाँदीजश्न मनाओ ,चाँदी है-

कैसे बेघर लोगों को घर मिल पाएगा
प्रश्न वहीं पर बुनियादी हैजश्न मनाओ ,

पत्थर फेंकोफोड़ो-तोड़ो ,आग लगाओ ,
आज़ादी ही आज़ादी हैजश्न मनाओ ,

ऊँचीमेरे मन में-सी दीवार तुम्हारे-

शायद फिर से चिनवा दी हैजश्न मनाओ ,

आधी आबादी दावत में झूम रही है

भूखी आधी आबादी हैजश्न मनाओ ,

जंगलजंग-लपर्वत आग लगी है-पर्वत ,

सहमीजश्न मनाओ ,सहमी हर वादी है-

जाने कब ये काम शुरू हो पाएगापर ,

हमने तख़्ती लगवा दी हैजश्न मनाओ ,

ग़ज़ल-2

लाचारी के दौर में कोई लाचारों के साथ नहीं था
तूफ़ानों के डर से कोई मछुआरों के साथ नहीं था

जंगल बस्ती जहां कहीं भी आग ,लगाई थी जिस दिन भी
उस दिन कोई भी अंगारा अंगारों के साथ नहीं था

हर युग में लड़ने वाला हर सैनिक ख़ूब लड़ा थापर वो ,
हथियारों के बीच में रहकर हथियारों के साथ नहीं था

सच्चाई के नाम पे जबजब झूठ छपा था अख़बारों में-
अख़बारों का अक्षरअक्षर अख़बारों के साथ नहीं- था

बिकने वाले की कीमत तो तय कर दी बाज़ारों नेपर ,
बिकने वाला माल कभी भी बाज़ारों के साथ नहीं था

जंगलभटका लेकिन क्या जानूं मैं ,पर्वत-पर्वत ,जंगल-
क्यों बंजारा होकर भी मैं बंजारों के साथ नहीं था

ग़ज़ल-3

हर नदी के पास वाला घर तुम्हारा
आसमां में जो भी तारा हर तुम्हारा

बाढ़ आई तो हमारे घर बहे बस
बन गई बिजली तो जगमग घर तुम्हारा

तुम अभी भी आँकड़ों को गढ़ रहे हो
देश भूखा सो गया है पर तुम्हारा

फिर तुम्हें कोई मदारी क्यों कहेगा
छोड़कर जाएगा जब बंदर तुम्हारा

ये ज़मीं इक दिन उसी के नाम पर थी
वो जिसे कहते हो तुम नौकर तुम्हारा

दूर उस फुटपाथ पर जो सो रहा है
उसके कदमों में झुकेगा सर तुम्हारा

ग़ज़ल-4

सर छुपाने के लिए छप्पर नहीं था
लोग कहते हैं कि उसका घर नहीं था

इन ग़रीबों के लिए केवल सड़क थी
दौड़ पड़ने का कोई अवसर नहीं था

जो बनाने के लिए भटका बहुत वो
घर वहीं थाबस वही घर प ,र नहीं था

हम ही उसके गांव में रहने लगे थे
सचहमारे गांव में बंदर नहीं था ,

पांव थे जो चल रहे थे बेवज़ह ही
मैं सफ़र में थामगर अक्सर नहीं था ,

आज सब कुछ है मगर है नींद ग़ायब
वो भी दिन थेनहीं था बिस्तर ,नींद थी ,

फ़्लैट में रहकर अकेले थे बहुत हम
सर पे छत तो थी मगर अंबर नहीं था

गालियां तो हमने थीं जीभर के दे दीं-
हाथ में बसआपका कॉलर नहीं था ,

तोड़ देते सभ्यता के कांच सारे
क्या करें परहाथ में पत्थर नहीं था ,

क्षणिक

प्लेटफार्म आने ही वाला था। शर्मिंदगी के मारे सूचना देने का साहस न हुआ था। ट्रेन रूकी, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के लगे होर्डिंग पर नजर पड़ी, व्यंग्य समाहित मुस्कान आकर चली गई। समता के अधिकार के विषय में नारे, झंडे बैनर, स्त्री विमर्श पर लेख से कुछ न होने वाला..। समाज की कथनी और करनी में बड़ा फर्क है। समान भूल एवं अपराध की सजा स्त्री-पुरुष के लिए अलग-अलग मुकर्रर होती है..!

क्या वह अकेली कसूरवार थी, देवर नहीं? गंजेरी और बुढ़ाते भाई की कमजोरियों से परिचित, इर्द गिर्द मंडराता, ढँके-छुपे शब्दों में प्रणय निवेदन करता रहता। पति से शिकायत की तो देवर भाभी की ठिठोली समझ टालते रहे थे..।

शरीर सौष्ठव से परिपूर्ण देवर का प्रणय निवेदन निसदिन ठुकराती रही वह..। उस दिन यौवन के क्षणिक आवेग में दिल पर दिमाग की लगाम ढीली हो गई..। वह भी हाड़-माँस की ही थी..। धनाढ्य ससुराल में, निर्धन तथाकथित विवाहिता की अनगिनत सन्नाटे भरी रातों के पश्चात एक हसीन रात आई थी। दुआ थी, “रुक जा रात, ठहर जा रे चंदा।” पर लुभावने लम्हें कब रुकते हैं?

तड़के सास की नींद टूटी तो देवर को कमरे से निकलता देखा। उस पर गालियों की बौछार हुई उसकी सातों पुश्तों को समेटते हुये..। देवर को नादान कहा और उसे दो पुरुषों का संग करने वाली भ्रष्टा। परिणति गाँव-घर के सम्मुख उसे निजी वस्तुओं संग बाहर फिंकवा कर हुई। पड़ोसियों ने खूब तमाशा देखा।

बेटी को बोझ समझकर, आर्थिक अक्षमता की दुहाई दे, दुगुनी उम्र के व्यक्ति से जबरन ब्याह करवाने वाले माता-पिता, क्या उम्मीद रखे उनसे? देवी भी नहीं कि धरती मैया स्वयं में समेट लें, एक पतिता है।

उतरने का साहस न बटोर पाई। ट्रेन पुनः रेंगने लगी। उसे अन्य यात्रियों के संग लेकर चल पड़ी, एक अनजान मंजिल की ओर..।

समंदर

****

फोन से संवाद के क्रम में माँ के कठोर वक्तव्य सुनकर वह संज्ञाशून्य हो गई ! पथराई निगाहों से उठती-गिरती लहरों को देखती रही। समंदर से भी बड़ा तूफान अंतर्मन में ठाठें मार रहा था, “स्वार्थी लोगों की बातों को दिल से लगा,जीवन क्यों समाप्त करना?” स्वविवेक ने साहस का संचार किया।

रात की ट्रेन थी। बताने के लिए फोन किया था कि आकर सब संभाल लेगी। माँ का प्रतिउत्तर था, “शादी में न ही आती तो अच्छा..। लड़की वाले कुलीन खानदान से ताल्लुक रखते हैं,गर किसी ने तुझे पहचान लिया तो...?”

“क्यों नहीं कहती माँ कि मुझसे शर्म आती है। पिता की लंबी बीमारी और बेहिसाब कर्ज़ों का हवाला देकर जब बड़े शहर भेजा था तो भूल गई थी कि मैं इतनी पढ़ी लिखी नहीं हूँ कि ढंग की नौकरी मिल सके। महाजन की धमकियों से परेशान, पैसों के लिए बार-बार घर से आते फोन..। भारी दबाव में यह रास्ता चुना तथा दलदल में धँसती ही चली गई। क्यों नहीं रोका था तब..?

भाई की शादी पर मेरा साया तक न पड़े, यही चाहती है न? आशीर्वाद देने का हक छीनना चाहती है? जब तक पैसों की तंगी थी, मैं और मेरे पैसे अच्छे थे..। हारी बीमारी, पढ़ाई-लिखाई, शादी-ब्याह, सब में वही पैसे खर्चे न तूने? भाई के डॉक्टर बनते, डाक्टर कन्या के पुत्रवधू बनने की धमक ने बेटी को दूर करने पर मजबूर कर दिया..! दहलीज पर मेरे लिए 'नो एंट्री' का बोर्ड लगा दिया, माँ!"

"ढेरों काम पड़े हैं ब्याह के। हड़बड़ी में मैं ढंग से समझा नहीं पाऊँगी, बात का बतंगड़ बन जाएगा। कहाँ इंकार है मुझे कि तू घर की रीढ़ है..। अपने इस त्याग को भाई के स्वर्णिम भविष्य के यज्ञ में अंतिम पूर्णाहुति समझ ले",कहकर माँ ने फोन काट दिया था..।

मीना सिन्हा

****

मेरे हिस्से में मेरी मां आई....

समीर उपाध्याय

मैनेजर- "संकल्प, तुम तो एक सप्ताह की छुट्टी लेकर पुश्तैनी मकान का बंटवारा करने के लिए गांव गए थे और दूसरे ही दिन वापस आ गए? क्या मकान का बंटवारा नहीं हुआ? क्या

कोई कोर्ट-कचहरी वाली बात हो गई?"

संकल्प- "साहब, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। मेरे दोनों बड़े भाइयों की इच्छा के अनुसार मां की एकमात्र निशानी जो पुश्तैनी मकान था उसे पचास लाख में बेच दिया और उस रकम को दोनों बड़े भाइयों के बीच आपस में बांट दिया। बस, बात हो गई पूरी तो मैं वापस चला आया।"

मैनेजर- "संकल्प, तो तुम्हारे हिस्से में क्या आया?"

संकल्प- "एक ऐसी मूर्ति जिसकी इस दुनिया में कोई कीमत ही नहीं आती जा सकती।

"मैनेजर- "क्या कोई सोने की मूर्ति थी तुम्हारे पुरखों के पास? बात कुछ समझ में नहीं आई! ऐसी कौन सी मूर्ति तुम्हारे हिस्से में आई?"

संकल्प- "त्याग, प्रेम, करुणा, सहानुभूति, समर्पण और आशीर्वाद की मूर्ति।"

मैनेजर- "मतलब?"

संकल्प- "मेरे हिस्से में मेरी मां आई।"

मैनेजर- "तो क्या बंटवारे में तुमने एक रूपया भी नहीं लिया?"

संकल्प- "नहीं, फूटी कौड़ी भी नहीं। मेरे पास तो अपनी मेहनत से बनाया हुआ घरौंदा है। सुशील पत्नी है। संस्कारी संतान है। सरकारी नौकरी है। बहुत बड़ी तनख्वाह है। घर में एक मां की ही कमी थी जो पूरी हो गई। अब जब भी मैं घर से बाहर निकलूंगा तब मां की दुआये कवच बनकर मेरी रक्षा करेगी। मां की दुआओं में बड़ी ताकत होती है। मां की दुआ से बड़ी दौलत इस दुनिया में और कोई नहीं होती। मैं अपने आप को बड़ा खुशकिस्मत मानता हूं कि मेरे हिस्से में जिसके मुंह से आशीर्वाद की निरंतर धारा बहती है ऐसी ममता की मूर्ति मेरी मां आई है।"

मैनेजर- "सचमुच, तुम्हारे विचार काबिल-ए-तारीफ है। काश! सभी की संतान तुम्हारे जैसे आदर्श विचारों वाली होती तो आज हमारे देश में एक भी वृद्धाश्रम न होता। संकल्प, आज मैं तुम्हारे आदर्श विचारों के आगे नतमस्तक होता हूं।"

किसी के सामने कभी ना झुकने वाले अभिमानी और संवेदन शून्य मैनेजर आज संकल्प की ऊंची भावना के आगे भावुक होकर नतमस्तक हो गए।

"हर छोटी चीज भी पता नहीं क्यों लगती ख़ास है। माँ के साथ रहने में ज़िंदगी में अलग ही मिठास है।"

छूट गई तूम तो

डा .नयना डेलीवाला

65 साल के विष्णुभाई के हाथ में से लाठी छूट गई। उनका हाथ हमेशा से कंपित होता ही रहता था। राधा बहन ने गिरी हुई लाठी उठाकर पति के हाथ में थमाते हुए कहा, “मैं हूँ तब तक तो संभाल लेती हूँ, नहीं रहूँगी तब क्या करोगे?”

विष्णुभाई बोले, राधा, लाठी चाहे भले ही छूट जाय पर तूम मत छूटना वरना मैं तो टूट कर बिखर जाऊँगा।

पति-पत्नी का यह संवाद मानो आकाश के ईश्वर ने सुन लिया।

एक रात्रि को शौच जाने के लिए उठे राधाबहन का पैर फिसल गया, सिर में बहुत ही गहरी चोट आयी।दो दिन कॉमा में रहकर राधा बहन तो चल पड़ी अनंत की यात्रा पर।

विष्णुभाई के आँखों से आँसु बहने लगे, और वह बोल उठे, राधा तुम तो छूट गई न !!!

मुझे तो बहु-बेटे के आश्रित होकर रहना पड़ेगा। विष्णुभाई का हाथ तो कंपन करता ही रहता, अतः हाथ से कुछ न कुछ तो गिरता ही रहता।

एक दिन सुबह-सुबह चाय पीते हुए हाथ कंपित हुआ और कप एवं प्लेट नीचे गिरे और टूट गये। चाय भी गिर पड़ी। और बहु गरज़ उठी, तोड़िए...तोड़िए बेटा नया ले आएगा... और हाँ.... मैं हूँ न नौकरानी, यह सब कुछ साफ कर दूँगी।

विष्णुभाई ने बहु के सामने दो हाथ जोड़कर कहा, “बहु बेटा प्लीज मुझे माफ़ कर दे....” कहकर खुद के कमरे में चले गये।

कमरे में आकर पत्नी की लटक रही तस्वीर को देखते रहे, दिल में घुटन होने लगी ।

और वे बोल उठे, ‘अच्छा ही हुआ राधा.... तुम तो छूट गई...

****

ऋषि पुत्री से बनी महारानी शकुंतला

शकुंतला नाम सुनते ही महाभारत का दृश्य सामने आने लगता है कि ऋषि पुत्री शकुंतला तथा पुरु वंश के महाराज दुष्यंत की प्रेम कहानी!

हमने समाज में शकुंलता तथा दुष्यंत की प्रेम कहानी तो बहुत सुनी होगी लेकिन ऋषि पुत्री शकुंतला के जीवन के कुछ पन्नों से अछूते ही रहे हैं!

जिस प्रकार एक वन में पलीबढ़ी शकुंतला ने महान सम्राट दुष्यंत को भी अपने स्वाभिमानी - !तथा कुशल क्षत्राणी होने का एहसास करा दिया थाऋषि पुत्री शकुंतला की साहस और धैर्य के आगे पुरु वंश को उन्हें वापस अपने पास लाना पड़ा!

एक समय की बात है कि महाराजा दुष्यंत वन में भ्रमण के लिये निकले हुये थे ! तभी वह कणव ऋषि के आश्रम को देखकर अपनी प्यास बुझाने के लिए उनके आश्रम की तरफ गये ! उन्होंने महर्षि कण्व को जल पिलाने के लिए आवाज लगाई तो आश्रम में से एक सुंदर ! लड़की जल लेकर आती है महाराजा दुष्यंत उस !देवी से पूछते हैं कि ऋषि वर कहां है देवी?

तब लड़की ने कहा – ऋषि वर तो अन्य काम से बाहर गए हैं!

लेकिन उनके मन की जिज्ञासा कुछ ओर ही थी आखिर उन्होंने पूछ लिया कि महर्षि कणव तो ब्रह्मचारी हैं फिर आप किसकी पुत्री है?

तब शकुंतला ने कहा – मैं माता मेनका तथा विश्वामित्र की पुत्री हूँ और कणव ऋषि मुझे अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार किया है!

महाराजा दुष्यंत शकुंतला की सुंदरता तथा वाकपटुता से मोहित होकर, शकुंतला से विवाह की अनुमति मांगने लगे !तब शकुंतला ने भी विवाह की स्वीकृति दे दी !तब दोनों ने गंधर्व विवाह किया और कुछ समय बनो में ही व्यतीत किया!

कुछ समय पश्चात महाराजा दुष्यंत ने अपने राजकाज के लिए वापस अपने राज्य लौटने की इच्छा जाहिर की !तब शकुंतला ने कहा – राजन ऋषि वर के आने की मैं आश्रम में ही प्रतीक्षा करूंगी !उसके बाद ऋषि वर से आज्ञा लेकर मैं वापस आपके राज्य आ जाऊंगी ! महाराजा दुष्यंत, शकुंतला को एक अंगूठी देकर वापस अपने राज्य की तरफ लौट आये!

कुछ समय व्यतीत होने पर महर्षि कण्व ऋषि आश्रम में वापस आ गएसारा शकुंतला ने ! वृत्तांतऋषि कणव को बता दिया और कहा मेरी कोख के अंदर पुरु वंश का उत्तराधिकारी पल रहा है!

तब ऋषिवर कन्व ने कहा – बेटी विवाह के बाद उसका घर सुसराल होता है तुम्हें वहाँ जाना चाहिए!

रास्ते में महाराजा दुष्यंत के द्वारा शकुंतला को दी हुई अंगूठी गिर जाती है !वह महाराजा दुष्यंत के दरबार में पहुंच जाती है ऋषि पुत्री शकुंतला !दरबार में महाराज दुष्यंत से उनकी पत्नी होने का अनुरोध करती है लेकिन महाराज दुष्यंत उन्हें पहचानने से मना कर देते हैं!

शकुंतला जोकि स्वाभिमानी थी वह दुष्यंत के सामने गिड़गिड़ाती नहीं है बल्कि उनको चुनौती देती है –

"महाराज अगर मुझ में समर्थ होगा तो मैं स्वत ही अपना अधिकार प्राप्त कर लूंगी"!

इस तरह शकुंतला वापस वनों में लौट आती है कुछ समय पश्चात !सुंदर बच्चे को जन्म देती है!

शकुंतला दिन प्रतिदिन अपनी प्रतिज्ञा की अग्नि में जलती हुई अपने पुत्र का लालनपालन - इस तरह करती है कि वह बच्चा वनों के खूंखार जानवरों से खेलने लगता है, कभी वह सिंहो

के दांतों को गिनता है कभी !वह वनों में छिप कर रह रहे खूंखार असुरों का वध करता है ! जिसके कारण शकुंतला ने उसका नामसर्वदमन रखा !

उसकी उत्तम शिक्षा के लिए शकुंतला उसे कश्यप ऋषि के आश्रम में भेज देती है !जब सर्वदमन की शिक्षा पूर्ण होती है तब शकुंतला कहती है कि अब समय आ गया है कि तुम्हे चलकर पुरु वंश का उत्तराधिकारी बनना चाहिए!

तब माता शकुंतला अपने पुत्र सर्वदमन को लेकर महाराज दुष्यंत के दरबार में जाती हैं और जोर से गर्जना करती है कि

"यह महाराज दुष्यंत और शकुंतला का पुत्र सर्वदमन है, जिस में भी इसका सामना करने की ताकत हो वह उसे ललकारती है"!

उसके गठीला शरीर और मुख पर कांतिमान तेज को देखकर सब भयभीत होते हैंक्योंकि ! हुई थी सर्वदमन की ख्याति पहले से ही चारों ओर फैलीकोई भी उसका सामना करने के लिए तैयार नहीं होता है!

तब प्रजा के लोग उच्च स्वर में कहते हैं महाराज यही है इस पुरु वंश का उत्तराधिकारी ! जिसकी हमें प्रतीक्षा थी!

महाराज दुष्यंत शकुंतला से माफी मांगते हैं और पुत्र सर्वदमन को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित करते हैं सर्वदमन ने थोड़े ही समय में !पुरु वंश की कीर्ति को चारो और बढ़ा दिया तथा उसके राज्य में प्रजा सुखी और संपन्न रहने लगी जिस कारण वहां के लोग !सर्वदमन को भरत नाम की संज्ञा दी और आगे चलकर इसी !भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा!

यह होता है एक नारी का अदम्य साहस, जिसके आगे बड़े से बड़े सम्राटों को भी झुकना पड़ता है!

आलेख-

* पर्यावरण क्रांति के प्रेरक थे श्री कृष्ण *

एमडी वैष्णव

इतिहास साक्षी है कि मनुष्य तब अधिक सुखी था जब वह प्रकृति के अधिक निकट था। आज विज्ञान और भौतिक विकास के नाम पर वह प्रकृति से दूर ही नहीं बल्कि उसका प्रबल शत्रु बन बैठा है। यही कारण है कि आज वैष्विक उष्णता (ग्लोबल वार्मिंग) के कारण मनुष्य जाति प्रलय के कगार पर है। आज विष्व के वैज्ञा◌ानिकों की यह आम राय है कि जिस तेजी से हमारे उतरीय और दक्षिणी ध्रुव पिघल रहे हैं उससे आने वाले 10-12 सालों के भीतर ही समुद्र का जल स्तर इतना बढ़ जाएगा कि समुद्र किनारे बसे देष और शहर जैसे बंगला देष, मालदीव न्यूयार्क, मुंबई एवं कोलकाता जैसे देश प्रदेश जल मग्न हो जाएंगे। इस देष के पर्यावरण के लिए वह दिन सबसे अधिक दुर्भाग्णपूर्ण होगा जब गंगा और यमुना जैसी प्राणदायी नदियां सूखने लगेगी। धरती और समुद्र के भीतर हो रहे आणविक परीक्षणों तथा भूमिगत जल, खनिज एवं अन्य दोहन से सुनामी एवं भूकंप के खतरे बढ़ जाएंगे। औधोगिक चिमनियों से उगलती आग व धुंआ, फेक्टरियों से बहकर नदियों को प्रदूषित करता रसायन, तेजी से कटते जंगल के जंगल और उन्हीं के साथ तस्करों के हत्थे चढ़ते जंगली पषु पक्षी से त्रस्त हमारी प्यारी पृथ्वी आज आदमी के इस आत्मघाती रवैये पर आंसू बहा रही है।

वैसे तो वेद पुराण कुरान और बाइबल सभी शास्त्र प्रकृति एंव पर्यावरण संरक्षक के प्रबल हामी रहे हैं लेकिन कृष्ण के जीवन चरित्र में उनके प्रकृति एवं पर्यावरण प्रेम की जो खुषबू हम पाते हैं वैसी अन्यत्र नहीं मिलती।वे सचमुच प्रकृति प्रेम और पर्यावरण क्रांति के प्रेरक युग पुरूष थे। साढ़े सात वर्ष की उम्र में उन्होंने प्रकृति के प्रति अद्भुत प्रेम और महत्व दर्षाते हुए वर्षा के लिए इन्द्रदेव की पूजा को अनावष्यक करार देते हुए गोवर्धन नामक दिव्य पर्वत की पूजा करने के लिए बृजवासियों को प्रेरित किया । गोवर्धन पर्वत की संरचना ही कुछ ऐसी रही है कि उसके करीब 22 वर्ग किलोमीटर के आकार में अधिक उंचाई न होकर समतल फैलाव अनेक स्थानों पर है जिससे उस पर गायों के लिए खूब घास, औषधिक वनस्पति एवं अनेक पेड़ पौधे उगे हुए हैं। कृष्ण ने कहा कि हमारे समस्त गोधन (तत्समय सम्पति का सूचक) को यह चारा उपलब्ध कराता है। इसी से वर्षा का जल बहकर यमुना में जाता है। अतः गोरधन को पूजा जाय। उसके बाद इन्द्रकोप का सामना कर इन्द्र का मान मर्दन जिस प्रकार से उन्होंने गोवर्धन धरण कर किया वह जग जाहिर है। कदम्ब और करील के पेड़ों को जिस कदर उन्होंने संवर्धन एवं गरिमा प्रदान की उसका वर्णन श्री मद् भागवत एवं गर्ग संहिता में विद्यमान है।

कालिया नाग की लीला की पृष्ठ भूमि में निहित दर्षन और पर्यावरण तत्व को समझने की जरूरत है। कृष्ण के लिए यह बर्दाष्त के बाहर था कि यमुना नदी का जल प्रदूषित हो जाए और ऐसा विषैला जल पीकर बृजवासी और उनका पषुधन मौत के मुंह में चला जाए। इसीलिए उन्होंने कालिया नाग को यमुना नदी छोड़ कर अन्यत्र चले जाने को विवष किया और यमुना का जल उसके जहर से प्रदूषण मुक्त किया।

प्रारंभ से गोपालन और गायें चराने के कारण उनका नाम गोपाल पड़ा। गाय के दूध, दही, मक्खन, घी से तन मन को बलिष्ठ बनाना, उसके गोबर से ईंधन, आंगन एवं कुटि लेपन तथ गोमुत्र से नाना प्रकार के उपचार से लोगों को लाभान्वित होने के लिए उन्होंने प्रेरित किया। आज भी वैज्ञानिक मानते हैं कि गोबर से लेपित आंगन एवं दीवारों वाले मकान पर अणु परमाणु विकिरण का प्रभाव नहीं पड़ता। कृष्ण जब मधुर मुरली की तान छेड़ते थे तब गोपियों के अलावा तोतें, मोर, हरिण एवं अन्य पषु पक्षी तक उनके पास आ बैठते थे। कहते हैं कि त्रैतायुग में सीता वियोग में वन विचरण करते राम लक्ष्मण को एक मोर ने आगे आगे चल कर किष्किन्धा पर्वत का रास्ता दिखाया था । उसी का आभर मानकर कृष्ण ने द्वापर युग में अपने मुकुट में मोरपंख धारण किया था । कृष्ण को वासुदेव भी कहते हैं। वासुदेव का अर्थ वह देव जिसका कण कण में वास हो। जब कृष्ण का कण कण में वास है तो प्रकृति का वह कौन सा जर्रा हो सकता है जिसमें वे न हों और उस जर्रे तक के संरक्षण से उन्हें प्रेम न हो। ब्रह्मा जी को महामाया के प्रभाव से यह भ्रम हो गया कि कृष्ण जो एक साधारण ग्वाल बाल के रूप में गायें चराते हैं सर्वज्ञ ब्रह्म कैसे हो सकते हैं। इसकी परीक्षा के लिए जब उन्होंने एक बार कृष्ण के ग्वाॉल सखाओं और गाय बछड़ों का अपहरण कर एक गुफा में छुपा लिया तब कृष्ण ने ऐसी लीला रची कि ब्रह्माजी को सभी गाय बछड़ों तथा यहां तक कि हर पेड़ पौधे में कृष्ण की छवि नजर आने लगी । इस पर उन्होंने अपने इस कृत्य के लिए लज्जित होते हुए क्षमा चाचना की।

मिट्टी पृथ्वी के पर्यावरण का प्रमुख अंग है। इसी के कारण खेती बाड़ी और पेड़ पौधों का अस्तित्व संभव है। इसीलिए उन्होंने ब्रज की रज का महत्व इतना अधिक बतलाया कि स्वयं मुक्ति का भी महत्व उसके आगे फीका पड़ गया।

उन्होंने गीता (3/13) में यज्ञ की अपनी क्रांतिकारी परिभाषा देते हुए -

"यज्ञ षिष्टा षिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्विषै भुज्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्म् कारणात" की जो बात कही है उसमें प्रकृति के समस्त जीवों के संरक्षण एवं उनके पर्यावरण प्रेम की खुषबु आती हैं। उन्होंने यही कहा कि जो व्यक्ति अपनी आय के पांच हिस्से कर केवल पांचवा हिस्सा स्वयं के पोषण पर तथा शेष चार भाग पृथ्वी के अन्य जीवों एवं पेड़ पौधों के संरक्षण पर खर्च करता है वह पुण्यवान जीवन जीता है अन्यथा जो केवल अपने सुख और पेट को भरने पर ध्यान देता है वह साक्षात पाप को खाता है ।

कृष्ण ने गीता में स्वयं अपना परिचय देते हुए यह स्पष्ट कहा कि वह देवो में इन्द्र, मुनियों मेॆ कपिल तथा पेड़ों में साक्षात पीपल आदि है । यह वनस्पति विज्ञान का प्रामाणिक तथ्य है कि पेड़ों में सबसे अधिक प्राणवायु (ऑक्सीजन) देने वाला पेड़ पीपल ही है।

हमारे वेदों में 'वनस्पति शांतिः' की बात की गयी है । हिमालय को देव मानकर उनकी पुत्री के रूप में पार्वती का जिक्र किया जाना पर्यावरण संतुलन एवं प्रमुख नदियों के स्रोत एवं अथाह वनस्पति के जनक हिमालय पर्वत को गरिमा प्रदान की गयी। इतना ही नहीं वैराग्य के प्रतीक शुकदेव एवं काक भूषण जैसे महात्माओं का सम्बन्ध क्रमषः तोते और कौवे से बतलाकर ऐसे पक्षियों को भी महत्व दिया गया। विष्णु के अनेकों अवतार जैसे कच्छप अवतार, मत्सयावतार, वरहावतार तथा विभिन्न देवों की सवारियों के रूप में गरूड़, हंस, मोर, हरिण, सिंह, बैल, भैंसे और यहां तक कि चूहे को भी गरिमा प्रदान कर यह प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है कि इस संसार में हर पषु पक्षी की अपनी सार्थकता, आवष्यकता और महत्व है।

हर पेड़ षिव का रूप है। फर्क इतना ही है कि षिव की जटाओं में जल (गंगा) संरक्षण हुआ और पेड़ अपनी जड़ों रूपी जटाओं के माध्यम से जल एवं उपजाऊ मिट्टी का संरक्षण करते हैं। मृत्यु के समय आदमी के दाह संस्कार हेतु कम से कम साढ़े चार क्विंटल लकड़ी की आवष्यकता

होती है। अतः हर व्यक्ति का धरती के प्रति कम से कम एक पेड़ उगाकर पोषित करने का ऋण तो हमेषा रहता ही है। फिर आदमी ईंधन एवं इमारती लकड़ी, कागज आदि का भी उपभोग करता है अतः धरती और पर्यावरण के प्रति उसके ऋण से वह तभी मुक्त हो सकता है जब जीवन भर वह पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पित रहे।

सरकारी तंत्र करोड़ों खर्च करके भी हमारी नदियों को प्रदूषण मुक्त करने में असफल रहा है।विकास के नाम पर लाखों पेड़ कट रहे हैं। टाइगर,शेर और हाथी जैसे शानदार जानवरों का बेरहमी से षिकार हो रहा है। इस सब को रोकने के लिए सरकार को कठोर कदम उठाने होंगे। प्रत्येक जन मन में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना उत्पन्न करनी होगी । तभी हम भविष्य के प्रति आषान्वित हो सकते हैं। हमें लोभ वृति छोड़ कर प्रकृति मित्र बन कर जीना आरंभ करना ही होगा अन्यथा आज प्रकृति मनुष्य की उसके प्रति क्रूरता के कारण कोरोना जैसा प्रकोप उत्पन्न कर कुपित हो रही है कल वह डायनासोर व सेबरटीथ टाइगर की भाति समस्त मनुष्य जाति को भी विलुप्त कर सकती है।

****

ऐतिहासिक स्थल एक नजर

अजयमेरु दुर्ग

- अजयमेरु दुर्ग का निर्माण शाकम्भरी (सांभर) के चौहान शासकों ने अरब खलीफाओं के आक्रमणों से सुरक्षा के लिए इस दुर्ग का निर्माण करवाया!
- इतिहासकार कर्नल टॉड ने अजमेर नगर के संस्थापक चौहान नरेश अजयराज को इसका निर्माता माना है, जिसके नाम से यह किला अजयमेरु दुर्ग कहलाता है!

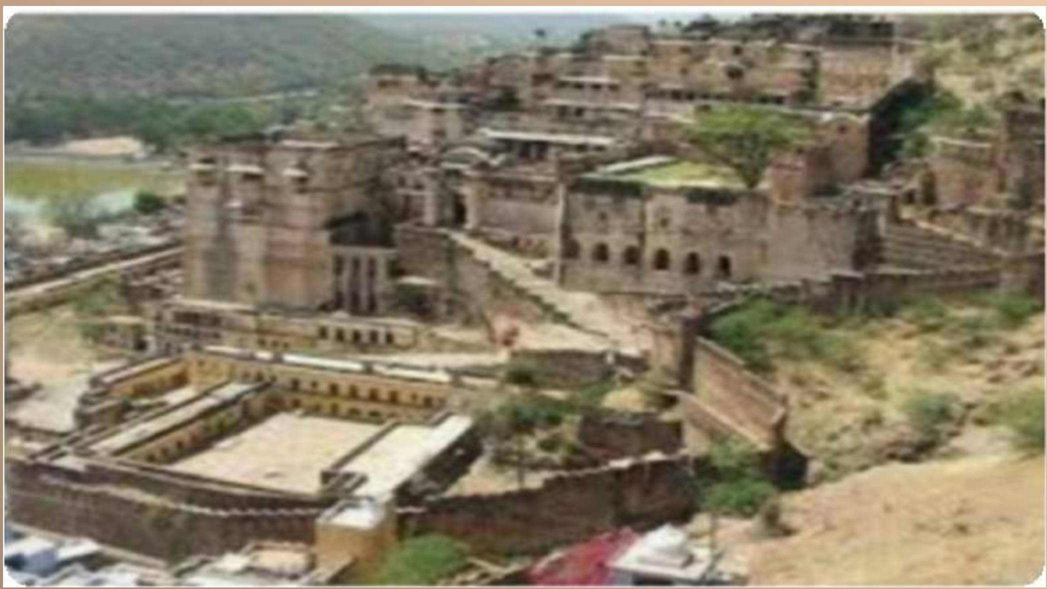

- मेवाड़ के राणा रायमल के युवराज (राणा सांगा के भाई) पृथ्वीराज ने इस दुर्ग का कुछ भाग बनवाया और अपनी वीरांगना पत्नी तारा के नाम पर इसका तारागढ़ नाम रखा!
- अजमेर दुर्ग के एक अन्य नाम गढ़ बीटली है! क्योंकि जिस पहाड़ी पर यह दुर्ग बना हुआ है उस पहाड़ी को बीटली कहते हैं! इसके पीछे एक अन्य मत यह भी है की मुगल बादशाह शाहजहां के शासनकाल में विट्ठल दास गॉड यहां का दुर्गाध्यक्ष था जिसने इस दुर्गा जी नो दर करवाया तथा उसे नया स्वरूप प्रदान किया!

- तारागढ़ दुर्ग की अभेद्यता के बारे में बिशप हैबर ने कहा है –" पर्वत के सर्वोच्च शिखर पर तारागढ़ नामक एक भव्य दुर्ग है! यदि यूरोपीय तकनीकी को अपनाते हुए इसका जीर्णोद्धार करवाया जाए तो दूसरा जिवाल्टर बन सकता है!"
- इतिहासकार हरबिलास शारदा ने ' अखबार-उल -अखयार ' को उद्धृत करते हुए लिखा है कि तारागढ़ कदाचित भारत का प्रथम गिरी दुर्ग है!
- महमूद गजनबी ने 1024 ई. में तारागढ़ पर घेरा डाला, लेकिन स्वयं घायल हो जाने के कारण घेरा उठा लिया!
- तराइन के द्वितीय युद्ध में पराक्रमी पृथ्वीराज चौहान तृतीय की पराजय के बाद तारागढ़ पर मोहम्मद गोरी ने अधिकार कर लिया! उसके पश्चात पृथ्वीराज चौहान के छोटे भाई हरि राज ने इसे पुनः हस्तगत कर लिया, लेकिन कुतुबुद्दीन ऐबक ने उससे वापस छीन लिया!
- प्रसिद्ध मुस्लिम संत मीरा साहब (तारागढ़ के प्रथम गवर्नर मीर सैयद हुसैन) की दरगाह स्थित है!
- इस दरगाह में घोड़े की मजार भी है!
- धौलपुर युद्ध में शाही सेना से पराजय के बाद शहजादा दारा शिकोह द्वारा तारागढ़ दुर्ग में आश्रय लिया था!
- अकबर द्वारा सन 1571 -1572 ई. मे सुरक्षित आवास स्थल के रूप में इस दुर्ग को निर्मित किया गया!
- मुगल शासक जहांगीर इसी दुर्ग की खिड़की में बैठकर जनता की फरियाद सुनते थे!
- सर टॉमस रो यहीं पर जहाँगीर से मिला था!
- 1908 से राजपूताना अजायबघर (राजकीय संग्रहालय) इसी में है!

महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल :-

ख्वाजा मोहिद्दीन चिश्ती की दरगाह :- यह दरगाह ख्वाजा साहब, अजमेर शरीफ और गरीब नवाज के नाम से विश्व विख्यात है! इस दरगाह पर प्रतिवर्ष उर्स मेले का आयोजन होता है!

अढाई दिन का झोपड़ा :- अड़ाई दिन का झोपड़ा मूरत है प्रथम चौहान सम्राट बीसलदेव द्वारा 1153ई. मे संस्कृत पाठशाला के लिए बनवाया गया !कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे मस्जिद का रुप दियामुसलमान फकीर पंजाब !शाह का अढाई दिन का उर्स यहां लगने के समय से यह स्थान अढ़ाई दिन का झोपड़ा कहलाने लगा!

तीर्थराज पुष्कर:- अजमेर से किलोमीटर की दूरी पर स्थित पुष्कर घाटी के नाम से 11 भारतीय धर्म शास्त्र में !विख्यात जहां ब्रहमा का एकमात्र एवं प्राचीनतम मंदिर स्थित है सर्वाधिक पवित्र मानेगये पांच तीर्थो में से एक पुष्कर भी है!

पुष्कर पशु मेला:- राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटन ग्राम का आयोजन कर यह मेला प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला !दिन के लिए भरता है 15 से 8

चश्मा-ए-नूर :- जहांगीर ने अपने नाम नूरदीन जहांगीर से इसका नाम चश्मा-ए-नूर रखा!यह तारागढ़ के पश्चिम में स्थित है!

दादाबाड़ी:- श्वेतांबर संप्रदाय के जैन संत वल्लभ सूरी के शिष्य जिन दत्त सूरी की स्मृति में निर्मित समाधि स्थल को दादाबाड़ी के नाम से जाना जाता है!

ब्यावर का बादशाह मेला:- होली के त्योहारों पर यहां बाद शाह मेला लगता हैइसके ! दूसरे दिन बादशाह की सवारी बड़ी धूमधाम सेबादशाह मेला समिति द्वारा निकाली जाती है!

आनासागर :- अर्णोराज) आनाजीद्वारा निर्मित झील (, जहांगीर द्वारा निर्मित दौलत बाग यही अवस्थित है!

मसूदा :- प्रथम साक्षर गांव!

रामसर :- केंद्रीय बकरी प्रजनन एवं अनुसंधान केंद्र!

अन्य महत्वपूर्ण बिंदु -:

- तारागढ़ दुर्ग के भीम बुर्ज पर गर्भ गुंजन तोप रखी हुई है इसकी विशेषता यह है कि यह अपने विशाल आकर और मारक क्षमता से शत्रुओं के छक्के छुड़ाने का कार्य करती थी! लेकिन वर्तमान में यह तोप सिर्फ प्रदर्शन की वस्तु बनकर रह गई है! इस तोप के बारे में कहा जाता है जब यह चलती थी उदर में गुंजन उत्पन्न हो जाती थी! इसलिए इस तोप का नाम गर्भ गुंजन रखा गया! सोलवीं सदी में यह तोप कई बार चलाई गई थी!

"सफलता तक पहुंचने के लिए असफलता के रास्ते से गुजरना पड़ेगा ।"

- अज्ञात

****

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

यह सम्मान मध्य प्रदेश शासन के द्वारा आदिवासी लोक कालाओ क़ो प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए दिया जाता है ! यह पुरस्कार आदिवासी लोक एवं पारम्परिक क्लाओं में उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ कृतियों हेतु प्रदान किया जाता है ! इन कलाओं में राष्ट्रीयता क़ो विकसित करने के लिए एक वार्षिक पुरस्कार स्थापित किया है !

चयन प्रक्रिया -

तुलसी सम्मान असाधारण सृजन, उत्कृष्टता एवं दीर्घ साधना क़ो आधार में रख कर दिया जाता है ! चयन की एक निश्चित प्रक्रिया होती है !

तुलसी सम्मान की चयन समिति –

तुलसी सम्मान की चयन प्रक्रिया के अनुसार संस्कृति विभाग, वर्ग विशेष के लिए निर्धारित कलानुशासन के कलाकारों, विशेषज्ञों, रसिकों और संगठनों आदि से अपने रचनात्मक विशेषता के अनुरूप उपयुक्त कलाकारों के नामों की अनुशंसा की जाती है ! ये सभी अनुशंसाएं इकट्ठा करके विशेषज्ञयो की चयन समिति के समक्ष अंतिम निर्णय हेतु रखी जाती हैं !

इस निर्णायक समिति में राष्ट्रीय ख्याति के कलाकार और विशेषज्ञ शामिल होते हैं !

चयन समिति क़ो यह अधिकार प्राप्त होता है कि यदि कोई नाम जुड़ने से रह गया है तो उसे अपनी तरफ से जोड़ सकते हैं !

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान प्राप्तकर्ता

पं. गिरिजा प्रसाद84-1983 --

हीरजी केशव जी84-1983 --

भगवान साहू85-1984 --

सु नीलमणि देवी86-1985 --

सु गंगा देवी86-1985 --

सु सोना बाई87-1986 --

मणि माधव चाक्यार88-1987 --

मदनलाल निषाद88-1987 --

भुलवाराम यादव88-1987 --

गोविन्द निर्मलकर88-1987 --

सु फिदाबाई मरकाम88-1987 --

देवीलाल नाग88-1987 --

व्ही.गणपति स्थपति89-1988 --

एन .वीरप्पन89-1988 --

जिव्या सोमा म्हसे89-1988 --

यक्षगान दल उडुपी89-1988 --

सागर खाँ90-1989 --

सादिक खाँ90-1989 --

बड़ा गाजी खाँ90-1989 --

बालप्पा बी .हुक्केरी91-1990 --

बालकृष्ण दास91-1990 --

झाडूराम देवांगन91-1990 --

चमरूराम बघेल92-1991 --

कोग्गा देवन्ना कामथ94-1993 --

अर्जुनसिंह धुर्वे94-1993 --

बेलायुधन नायर95-1994 --

उमगराज खिलाड़ी95-1994 --

मांगुणी दास96-1995 --

मती महासुन्दरी देवी97-1996 --

स्वामी हरिगोविन्द98-1997 --

ओमप्रकाश टाक99-1998 --

पूरनचंद-प्यारेलाल वडाली00-1999 --

पूर्णचन्द्रदास बाउल01-2000 --

गुरुप्पा चेट्टी02-2001 --

रामकैलाश यादव03-2002 --

उस्ताद गुलाम मुहम्मद साज नवाज़04-2003 --

प्रकाश चन्द05-2004 --

स्वामी रामस्वरूप शर्मा06-2005 --

लल्लु वाजपेयी07-2006 --

पं.सत्यनारायण शर्मा08-2007--

रंगास्वामी वेडार09-2008--

प.रामसहाय2013-2012 --

तिलक राम पेनद्राम2020 -

आयुर्वेद में आमला के अद्भुत लाभ

अंवला क़ो आयुर्वेद में अमृतफल या धात्री फल कहा गया है ! वैदिक काल से ही अंवला का प्रयोग औषधी के रूप में किया जा रहा है ! यह एक जड़ी बूटी है जिसका इस्तेमाल मॉडर्न मेडिसिन बनाने के लिए किया जाता है! इसकी खेती प्रमुख रूप से भारत में होती है और इसे अंग्रेजी में इंडियन गूसबेरी के नाम से जाना जाता है ! यह एक वृक्ष पर लगने वाले फल के रूप में प्राप्त होता है !

आमला क़ो रसायन द्रव्यों में उत्तम माना गया है !

चरक संहिता में आयु बढ़ाने, कुष्ट रोग का नाश करने वाली औषधी के लिए आमला का उल्लेख मिलता है!

सुश्रुत संहिता में आमला क़ो अधोभागहर संशमन औषधि बताया गया है! , जो शरीर के दोष क़ो मल के द्वारा बाहर निकालने में मदद करता है!

आयुर्वेद आहार में आंवला क़ो स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत फायदेमंद माना गया है !

चिकित्सिय गुणों वाले आमला क़ो नियमित रूप से लेने पर लम्बे समय तक चलने वाली एलोपैथिक दवाओं पर निर्भरता क़ो कम कर सकती है ! आयुर्वेद में अंवला क़ो औषधि के रूप में माना गया है ! इसे विटामिन सी का भरपूर स्त्रोत माना गया है ! यह शरीर क़ो दिव्य गुणों से भर कर मजबूती प्रदान करता है जिसे रोग प्रतिरोधक क्षमता कहा जाता है !

आज इस लेख में आप सभी क़ो इसके कुछ विशेष गुणों के बारे में बताते हैं -

1. अंवले के फल, फूल, बीज, छाल और जड़ों का इस्तेमाल अलग अलग व्याधियों के निवारण हेतु किया जाता है !
2. आयुर्वेद 5000 वर्ष पुरानी मेडिकल साइंस है! जिसके विशेषज्ञ अंवला में शक्तिशाली एंटी ऑक्सीडेंट्स, बताते हैं ! यह एक प्रकार के हर्ब्स में गिना जाता है ! जिसमें भरपूर मात्रा में घुलनशील फाइबर होते हैं !
3. यह ऐसा नेचुरल हर्ब है जो डाईज़ेस्टिव डिस ऑर्डर क़ो कम करता है !
4. आमला का उपयोग मुँह के छालों क़ो ठीक करने, कॉलेस्ट्रॉल पर नियंत्रण करने के लिए, अस्थमा, लिवर से सम्बन्धित रोगों की चिकित्सा, बालों की सेहत, चेहरे के दाग क़ो, ठीक करने आदि के लिए किया जाता है !

"अपने शरीर को स्वस्थ रखना एक कर्तव्य है, अन्यथा हम हमारे मन को साफ और मजबूत रखने के लिए सक्षम नहीं हो पाएंगें।"

साक्षात्कार

अनामिका भूषण

सीनियर लीगल ऑफिसर

नमस्कार मैडम,

नई गूँज पत्रिका में आपका स्वागत है! हम आपका परिचय करवा रहे हैं सीनियर लीगल ऑफिसर अनामिका भूषण जी से! जिनकी प्रेरणा और विचारों से हमको और हमारे पाठकों को बहुत कुछ सीखने को मिलेगा!

1.*सबसे पहले वर्तमान में आप का पद क्या है, इस विषय में पाठकों क़ो बताएं?*

सादर वन्दे!सुप्रभात सत श्री अकाल ! सबसे पहले मुझे अपना परिचय देने हेतु आमंत्रित करने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद ।मेरा नाम अनामिका भूषण है । वर्तमान में राजस्थान सरकार शासन सचिवालय स्थित पंचायती राज विभाग में सहायक विधि परामर्शी के पद पर सेवारत हूँ।

2. *आप अपने जीवन में अब तक प्राप्त प्रत्येक सफलता का श्रेय किन्हें देना चाहेंगे?*

बहुत ही सटीक एवं प्रचलित प्रश्न पूछा आपने ,सर्वप्रथम में यहां दो शब्दों को स्पष्ठ करना चाहूंगी जीवन एवं सफलता इन दोनों का हर एक के व्यक्तित्व में अलग अलग मायने है ,जीवन मेरे जहन में मानवीय संवेदनाओं के प्रति एक स्पष्ठ नजरिया है वही सफलता आपके नजरिया का आपके मस्तिष्क पटल पर कार्य विशेष के मूल्यांकन की कसौटी। मैं मानती हूँ कि हर स्तर पर मनुष्य सफलता के कई छोर तक पहुचता है ,बस जरूरत है तो उस छोर पर आई मुसीबत ,परेशानी को एक मानवीय दृष्टिकोण से यूनिवर्स से तोहफा समझ कर उसे स्वीकार कर आगे बढ़ना ।यही सब घटित हुआ मेरे जीवन मे यो कुछ और व्यक्तिगत एवं प्रोफेशनल स्तर पर जीवन मे कई मोड़ पर असफलता के साथ सफलता ने दस्तक दी और उसे स्वीकार कर आगे बढ़ती चली गई। वास्तव में सही बताऊँ व्यक्ति किसी सफलता के लिए असल मे किसी व्यक्ति विशेष को श्रेय नही दे सकता ,मेरी नजर व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का सफलता का निर्माता खुद है ,बाकी कोई भी परिवारजन ,गुरु ,सच्चा मित्र आपको तय मंजिल के दौरान आपको मानवीय सहयोग दे सकता है और कुछ नही ।

3. *आप ने इस पद पर पहुंचने के लिए तैयारी का केन्द्र किन बिंदुओं क़ो रखा ?*

बहुत ही महत्वपुर्ण प्रश्न ! यहां एक शब्द जो आपने यूज लिया है पद ,इसका सतत रूप से मेहनत ,विषयगत ज्ञान कौशल एवं समय का सटीक बेहतर प्रबंधन एवं सरकारी परीक्षाओं की जानकारी एवं विषय विशेषज्ञों का मार्गदर्शन बस यही बिंदु आपको किसी भी पद तक पहुचा सकते है और मैने यही फॉलो किया।

4. *एक महिला क़ो पुरुष की तुलना में कड़े संघर्षो का सामना करना पड़ता है, क्या आप इस बात से सहमत हैं ?*

ज्वलंत प्रश्न !मुझे लगता है महिला सशक्तिकरण हेतु आप काफी प्रेरित दिखाई देते है । वाकई में एक महिला ही है जो एक मात्र कृति है इस सृष्टि की जिसकी तुलना पुरुष क्या किसी तत्व से नही की जा सकती । महिला को वेदों में इसलिए पूज्यनीय माना गया है ।यंत्र नार्यस्तु पूज्यते ,तत्र रमन्ते देवता। वस्तुतः संघर्ष से ही बालिका असल मे महिला एक मा का दर्जा प्राप्त करती है । जिस घर मे जिन माता पिता के साथ वह युवावस्था तक साथ रहती है एक करुणा रूपी संघर्ष को अपने अंदर आत्मसात कर वह अपने ही घर से विवाह के पायदान पर विदा कर दी जाती है ।असल मे संघर्ष का तो महिला का एक पुरुष से कोई

तुलना हो ही नही सकती है उसका संघर्ष तो एक बेटी जब महिला बन जाती है तो वही जाहिर कर सकती है ,और सकारात्मक रूप से देखे तो यह संघर्ष नही एक महिला की सशक्तता का परिचायक है ,महिला संघर्षो का ही नाम है ,इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई ,रानी दुर्गावती ,पन्नाधाय,पद्मावती ,आदि कई उदाहरण है हर स्तर पर संघर्षो के विभिन्न प्रतिरूपो में महिलाओं ने पुरुष से हटकर दुगुने संघर्ष के साथ अमिट छाप छोड़ी है।

5. *आपके माता पिता एवं परिवार का आपकी सफलताओं में क्या योगदान रहा है?*

माता पिता एवं परिवार ने जो सहयोग दिया वह मेरे लिए अतुलनीय है ,अविस्मरणीय है ।पिता श्री ने सदैव समाज की लीक से हटकर मुझे सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया और वही माताजी ने जीवन के कई अनछुए पहलुओं,कठिनाइयों के दौरान व्यक्तिगत स्तर पर कई जगह मुझे सम्बंल प्रदान किया।जिसकी बदौलत में आज भी प्रगतिशील हू

6. *आज जो students law से related अलग अलग exams की तैयारी कर रहें हैं, उन्हें क्या रण नीति बनानी चाहिए ?*

एक ही अचूक मंत्र है रणनीति का वह है -बेहतर पुस्तको का अध्ययन,नवीनतम जानकारी से ओतप्रोत रहना ,तकनीक का बेहतर उपयोग कर विषय मार्गदर्शकों से जुड़ाव रखे एवं आत्मविश्वास ,सतत प्रयास के साथ समय प्रबंधन से स्वस्थ दिनचर्या अपनाकर तैयारी की स्वयं के फिजिकल ,मेंटल कैपेबिलिटी ,वस्तुस्थिति के अनुसार एक सटीक रणनीति बनाये। परिस्थितियों का रोना नही ,उनसे लड़ना सीखे ।

7. *आज हम जितने भी आगे बढ़ते जा रहें हैं उतने ही नैतिक मूल्यों से कमी आती जा रही है, आप इस विषय में क्या कहना चाहेंगे?*

जीवन मे सबसे अमूल्य है तो नैतिक मूल्य ,मेने सदैव इसी पर जोर दिया और उसी की बदौलत व्यक्तिगत एवं प्रोफेशनल स्तर पर कई कठिनाइयों के बावजूद मुझे हमेशा सही मार्ग प्रशस्त होता गया। मैंरे जीवन मे सादा जीवन ,उच्च नैतिक मूल्य एवं आधुनिक सोच ही सर्वोपरि है । नैतिक मूल्यों में कमी तभी आएगी जब आपकी संगति गलत है ,आपका

आसपास परिवेश गलत है । नैतिक मूल्यों में कमी एक तरह से भारतीय संस्कृति से दूर होना भी है ।मैंने जीवन मे महिला होने के नाते सदैव सादगी का पक्ष रखा बाकी कुछ समय सामाजिक कार्यो एवम पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी देती आई हूँ।

8. *अपने जीवन के महत्वपूर्ण संघर्षो का ऐसा दौर जिसे आपने बखूबी निभाया, यदि आप पाठकों क़ो बताना चाहें तो उन्हें जरूर प्रेरणा मिलेगी?*

में पहले ही कह चुकी है एक महिला संघर्ष का परिचायक है और संघर्ष से ही महिला का,परिवार का ,समाज का वर्ण पूरे राष्ट्र का पुनरुत्थान होता है । मैंने संघर्ष को सकारात्मक रूप से आत्मसात किया और आगे बढ़ी बस कोई विशेष प्रसंग नही की में उसे शेयर करू।

9. *समाज और युवा पीढ़ी क़ो आपका क्या सन्देश है ?*

हमे अगर सामाजिक रूप से राष्ट्र की प्रगति के लिए आगे आना है तो जाति से उठकर गुणवत्ता ,योग्यता ,रहन सहन ,सामाजिक प्रतिबद्धता ,नैतिक मूल्यों की अवधारणा पर नव युवा पीढ़ी को गढ़ना होगा ।क्योकि समाज, जाति इंसान ने बनाई है हालांकि वर्ण व्यवस्था वैदिक काल मे प्रचलित थी परंतु आज आधुनिक युग मे स्वामी विवेकानंद ,महात्मा गाँधी ,भीमराव अम्बेडकर आदि के विचारों को अमल में लाने की आवश्यकता है तभी हम समाज की प्रगति कर पाएंगे और तभी राष्ट्र की प्रगति सम्भव होगी।

10. *महिलाएं जो आज कैरियर के लिए परिवार और काम दोनों संभाल रही है उनके लिए आपका सन्देश क्या है?*

देखिए वर्क लाइफ बेलेंस पर पूरे भारत मे आज चर्चा हो रही है ,आज कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाले भारत देश मे महिलाएं गांव हो या शहर हर जगह सभी क्षेत्रों में अव्वल आ रही है ,अब शिक्षा का विस्तार काफी अधिक हो चुका है बस अब वर्क लाइफ बेलेंस को सही से समझकर महिला और पुरुष को कंधा से कन्धा मिलाकर काम करने की आवश्यकता है । हालांकि महिला को सामाजिक परिवेश एवं एक दायरे में रहकर पोजिशन ,कार्य पद के अनुसार स्वयं को ढालने की आवश्यकता है और व्यक्तिगत स्तर पर अपने पारिवारिक मूल्यों

को सहेज कर रखना एवं संस्कृति के अनुरूप कल्चर हेतु महिलाओं को इस आधुनिक युग मे सचेत रहने की भी आवश्यकता है ।

मैडम आपने अपना अमूल्य समय निकाल कर नई गूँज के पाठकों को अपने विचारों तथा सफलता के रहस्य के बारे में बताया है! यह हमारे तथा हमारे पाठक गणों के लिए एक नई दिशा देगा! इसके लिए नई गूँज परिवार की तरफ से आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!

संपादक

शिवा स्वयं

मई अंक 2022 के लेखक परिचय

- प्रदीप कुमार शर्मा

  Pradipsharmajsr@gmail.com

  8092231276, 7992276386

- डॉ घनश्याम बादल

  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार

  Aryabrijeshsahu24@gmail.com

  9785837924

  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.

  321023

- डा. जियाउर रहमान जाफरी हाई स्कूल माफ़ी +2

  वाया -अस्थावां

  जिला -नालंदा

  803107, बिहार

  9934847941

  6205254255

  Zeaurrahmanjafri786@gmail.com

- अमरेंद्र कुमार तिवारी

  Amendra.Tiwari@gmail.Com

पता -Dubeyhar, kanpur pincode 208019

- अमरजीत कौके

  संपादक : प्रतिमान (पंजाबी)

  718, रणजीत नगर - ए, भादसों रोड , पटिआला (पंजाब)

  098142 31698

  Email : pratimaan@yahoo.co.in

- कवि गोलेन्द्र

  ग्राम-खजूरगाँव, पोस्ट-साहुपुरी,

  जिला-चंदौली, उत्तर प्रदेश, भारत।

  पिन कोड : 221009

  व्हाट्सएप नं. : 8429249326

  ईमेल : corojivi@gmail.com

- गौरीशंकर वैश्य

  117 आदिलनगर,विकासनगर

  लखनऊ 226022 दूरभाष 09956087585

- डा. अरुण तिवारी

  117/69,N,तुलसीनगर

  काकादेव

  कानपुर नगर,

  उत्तर प्रदेश ,208025

aruntiwarigopal@gmail.com

- प्रणव भारती C/o श्री मनीष शर्मा
  'कृष्ण कुटीर'
  10-बी,न्यू सूर्यनारायण सोसायटी-1
  सोमेश्वर महादेव मंदिर के सामने,
  रन्ना पार्क के पास
  घाटलोडिया, अहमदाबाद- 61
  मो; 9904516484
  Pranavabharti@gmail.com

- डॉ शिवा धमेजा 9351904104

  Drshivadhameja01@gmail.Com

  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

- डॉ राकेश जोशी
  एसोसिएट प्रोफेसर (अंग्रेज़ी), राजकीय महाविद्यालय,
  मजरा महादेव, पौड़ी (गढ़वाल), उत्तराखंड
  मोबाइल: 9411154939
  ई-मेल: joshirpg@gmail.com

- नीना सिन्हा
  ई-3/101, अक्षरा स्विस कोर्ट
  105-106, नबलिया पारा रोड
  बारिशा, कोलकाता - 700008

पश्चिम बंगाल
व्हाट्सएप नंबर 6290273367
नया ईमेल- neena.sinha@gmx.com
पुराना ईमेल - maurya.swadeshi@gmail.com

- समीर उपाध्याय

मनहर पार्क:96/ए चोटिला:363520
जिला:सुरेंद्रनगर
गुजरात
भारत
92657 17398
S.l.upadhyay1975@gmail.com

- डॉ नयना डेलीवाल

9327064948
N.deliwala13@gmail.Com
15, नीलगगन टावर,
नेहरू पार्क वस्त्रापुर
अहमदाबाद (380001)

- एमडी वैष्णव (मुरलीधर वैष्णव)

ए -77, रामेश्वर नगर,
बासनी 1 जोधपुर
(342005)
मोबाइल. 9460776100
Mdvaishnav.1945@gmail.com

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

महाराणा प्रताप

नई गूँज

DESIGN BY RAHUL DEEWAN

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924